राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एन.सी.ई.आर.टी.)
द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम पर आधारित

अविरल

हिंदी की अनुपम् पाठ्यपुस्तक

6

लेखिका
डॉ० नीता रानी
एम.ए. (हिंदी) नेट उत्तीर्णित
पी-एच.डी.

संपादकमंडल
नीता श्रीवास्तव
एम.ए., बी.एड.
(दिल्ली पब्लिक स्कूल)

₹ 510.00

MR. JACK BRAIN

BOOK 1 INTERNATIONAL
INTERNATIONAL BOOK QUALITY EDUCATIONAL BRAIN STIMULATING
ISBN 978-81-90127-00-1, 90-90-00

©Mr. Jack Brain Books
No part of this book may be reproduced or copied in any form or by any means (graphics, electronic or mechanical, including photocopying, recording, taping, or information retrieval system) or reproduced on any disc, tape perforated media or other information storage device, etc., without the written permission of the publishers. Breach of this condition is liable for legal action.

Designs and Illustrations by:
Design King, New Delhi

Printed by:
Rastogi Print Media Pvt. Ltd., Greater Noida

भूमिका

बदलते परिवेश के साथ शिक्षा पद्धति में भी बदलाव की आवश्यकता होती है। इसलिए नवीन शिक्षा पद्धति में सतत समेकित मूल्यांकन (समेटिव) तथा रचनात्मक कौशल (फॉर्मेटिव) को अनिवार्य घोषित किया गया है।

प्रस्तुत पुस्तक शृंखला **'अविरल'** पूर्णतया उसी के अनुरूप है। इसमें सरल व रोचक रीति से विद्यार्थियों को अपने समूचे परिवेश के साथ इस प्रकार जोड़ा गया है कि उनके व्यक्तित्व के हर पक्ष का परिष्कार हो सके तथा उनके नैतिक मूल्य सुदृढ़ हों एवं साथ-ही-साथ पाठ्यक्रम उनके लिए एक बोझ न होकर एक रुचिकर गतिविधि बन सके।

इस पुस्तक में गद्य व पद्य रचनाओं का संयोजन उनकी मानसिक अभिरुचि के अनुसार किया गया है। नीरसता या बोझिलता से कोसों दूर यह पाठ्य-पुस्तक अपनी नवीनता के लिए तो विद्यार्थियों को आकर्षित करेगी ही, साथ ही मातृभाषा को सीखने, समझने और उसका विकास करने में उपयोगी सिद्ध होगी, ऐसा विश्वास है।

पुस्तक में हिंदी साहित्य की लगभग सभी विधाओं, कहानी, कविता, एकांकी, पत्र, आत्मकथा एवं चित्रकथा आदि को यथास्थान संजोया गया है।

आशा है आप सभी अध्यापक बंधुओं एवं विद्यार्थियों को यह अवश्य पसंद आएगी। आपके सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

प्रकाशक

IMPORTANT TOPICS

NOTE SHEET

IMPORTANT TOPICS

NOTE SHEET

IMPORTANT TOPICS

NOTE SHEET

IMPORTANT TOPICS

NOTE SHEET

क्रम सं०	पाठ का नाम	विधा	संक्षिप्त भाव	विशिष्टता
1.	माँ गंगा प्रार्थना गान से	कविता	देवी सरस्वती से गान के स्वर-संगीत प्रदान करने की प्रार्थना।	सरस्वती देवी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए मातृभूमि की शरण का निवेदन।
2.	सत्य बाबा	संस्मरण	विनयन की धार्मिक प्रवृत्तियाँ।	पाप-भीरु धर्म की सजीव अभिव्यक्ति।
3.	चमत्कार	कहानी	विनयन की शक्ति द्वारा परिवर्तन का चमत्कार करने में सफल हैं।	अंततः राम, विनयन और ऐन ही उच्चों मुख-शांति में सफल हैं, इसका उद्घाटन।
4.	चाँद पर पदार्पण	गद्य	ऐन व लक्ष्य की अनुपम प्रवृत्ति।	आदमन के प्रति लक्ष्य ऐन का निवेदन। कालपुरुष किसानों की सुदृढ़ अभिव्यक्ति।
5.	लालबहादुर की कुर्सी	जीवन-परिचय	सादगीपूर्ण आदमी के कालपुरुष शीर्ष तक प्राप्त करने की कथा का वर्णन।	इच्छा शक्ति के अनोखे चमत्कार की साक्ष्य गाथा।
6.	साधु	कहानी	परिस्थितिक संघर्ष व द्वन्द्वों-गुलामे विचारों का चित्रण।	मंगुआ परिवार में एक-दूसरे से सबंधों के खो-जाने का चित्रण।
7.	आइए कविता उगाएँ	प्रश्न-उत्तर	मनुष्य की निष्ठा पूर्ति पर कटाक्ष।	कविता पूरे में पूर्णता पर संकेतात्मक करने की आशा पर पूर्णतो दिखाविकी।
8.	फागुन की सुबह	कविता	पूर्णों के अभिलाष के प्रश्न पर चित्रण।	नई कविता का उदाहरण।
9.	अब नहीं आती गौरैया	लेख	गौरैयों पर पर्यावरण का प्रभाव	संकल्प से चिड़ी प्रजातियों के प्रति जागरूकता।
10.	बीरबल पंगत खाई	कविता	ऐतिहासिक पात्र का वर्णन	ऐतिहासिक व्यक्तियत का मानवतावाद परिचय।

क्रम सं०	पाठ का नाम	विधा	केंद्रीय भाव	विशिष्टता
11.	केवल सात देश में	यात्रा वृत्तांत	कनाडा की घाटियों व विशिष्ट स्थानों का वर्णन	भारत की प्राकृतिक सुंदरता से एक परिचय।
12.	कुल ही पेड़ संतरा है	आत्मकथन	प्रकृति पुनर्वास के उद्गार	भारतीय सांस्कृतिक मूल परंपरा से एक परिचय।
13.	हम हैं सबके सब हैं हमारे	लेख	विश्व के प्रति उद्गार	कृतज्ञता भाव की अभिव्यक्ति पर प्रकाश।
14.	हमारा रिश्ता पृथ्वी से अटूट	जीवन-परिचय	महान लोक का परिचय।	हमारे महान पूर्वजों, संतों की महत्तिरूप कृति व परिचय कृति का विवरण।
15.	गुरुनानक पीपली	कविता	पीपली जी का सुविस्तार	विश्व मानव विस्तृतियों का समीक्षाकरण।
16.	मान प्रेम और अतिथि	भाषण के अंश	जीवन मूल्यों पर कथनात्मक	प्रेम हर व्यवस्था का समाधान है। यह स्पष्ट कारण।
17.	पंडितजी	कविता	स्वतंत्रोत्तर के प्रति गुरुत्वपन अपवर्ण को आवश्यकता पर बल।	आजादी के प्रति सजग दृष्टिकोण की आवश्यकता को पंडितजी।
18.	माँ मुझे उपवन	हास्य व्यंग्य	माँ के प्रति पुत्र का दायित्व	भाव की महानता पर आलोक।
19.	आजादी मुल में पानी	ललित निबंध	पानी का संकट और समाधान पर।	आने वाले समय में पानी के भीषण अकाल को संभावना पर संकेत दिखाविधी।
20.	भारतीय का भाव	पत्र	अपने कुल और आजादी के लिए संघर्ष का समीक्षाकरण।	मोह के उद्गार।

अनुक्रमाणिका

पाठ क्रम	पाठ का नाम	विधा	पृष्ठ संख्या
1.	माँ मधुर झंकार भर दो	कविता	11
2.	समय बाजार	संस्मरण	14
3.	चमत्कार	कहानी	19
4.	भक्ति परायणी	पद	29
5.	आत्मविश्वास की कुशली	जीवन-परिचय	34
6.	मजदूर	कहानी	42
7.	अवाह, कौआह उड़ाती!	हास्य-व्यंग्य	53
8.	जंगल की पुकार	कविता	57
9.	अब नहीं आती गौरैया	लेख	60
10.	बीरबल बंगल पोटे	कविता	65
	मूल्यांकन-1		67
11.	केवल चाले देश में	यात्रा-वृत्तांत	69
12.	तुम ही मेरा संसार है	आत्मकथन	76
13.	हम सबके और सब हमारे	लेख	80
14.	इन्हाल निकमुपुरीन अतिरेक	जीवन-परिचय	82
15.	सुखकर गंगी	कविता	85
16.	सत्य-प्रेम और अहिंसा	भाषण से अंश	87
17.	भेंडावली	कविता	92
18.	अपनाओ पुत्र में पानी	हास्य-व्यंग्य	97
19.	माँ तुझे प्रणाम	रागिता निबंध	101
20.	भगतसिंह का पत्र	पत्र	108
	मूल्यांकन-2		111

माँ मधुर झंकार भर दो

कविता

1

पाठ-परिचय

प्राण-विहीन का यह जो अवीम विस्तार है, इसकी यह चरम मधुरता के लिए माता अपना ही रोना यानि उसे देवी सरस्वती का आशीर्वाद व प्राण दो। प्रस्तुत कविता में कवि ने देवी से इसका आशीष माँगा है–

भावार्थ सुगम, सरल, अर्थोन्न, से सभी समझनेवाले हाल हैं।

करुणा करो हे शारदे!
सद्ज्ञान का विस्तार कर दो।
दूरा अपना हैं तुम्हारे,
अब मेरा विस्तार कर दो।

ज्ञान, अक्षर रहे न जाने,
भाव तुलन सके न जाने,
दूर चमत स्वर ज्ञान देकर,

गीत का गुंजन करो दो,
अब मेरा विस्तार कर दो।

कर्म, अनुकरण किया है
मेरे, भाग्यवश मुझ हिया है
दोष जो हैं, अवगुण जो हैं,

मुझसे पथ-संसार कर दो।
अब मेरा विस्तार कर दो।

मुझ-मधुर वीणा बजाकर
करुण की भरित मुझको
मेरे गीतों में कृपा कर

हे-मधुरी झंकार भर दो।
अब मेरा विस्तार कर दो।

–संकलित

शब्द : अर्थ

निखार	फिर तराश, उपहार कराव (reformation)	नूतन	नए (new)
राग	सुर (rythme)	शृंगार	साज-सज्जा (decoration)
पिए	पूरी तरह से (Completely)		

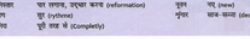

करें अभ्यास

कविता से

1. उचित विकल्प चुनिए :

(क) कवि चाहता है कि उसके ज्ञान का-
- प्रचार हो
- प्रसार हो
- सत्कार हो
- विस्तार हो

(ख) कवि नहीं खोना चाहता-
- अपना घर
- नूतन भाव
- अहान
- अभिनन्दन

(ग) अपने गीत के लिए कवि ने माँगा है
- निखार
- निटार
- शृंगार
- रचना

(घ) कवि ने अमर को कहा है-
- अज्ञानी
- नादान
- चतुर
- पंडित

2. कविता पढ़कर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(क) दुनिया अगाध है तुम्हारे
अब पैर _____ ।

(ख) तुम नवल स्वर राग रेकर
_____ दो।

(ग) मैं तो _____ हूँ।
_____ पिए हूँ।

भाषा-बोधन

1. रिक्त मिलाइए :

पिताजी / _____ पिता / _____

माँ / _____ संसार / _____

बड़ाई / _____

2. समानार्थक शब्दों को मिलाइए :

(क)	(ख)
अज्ञानी	प्रकाश
उदास	कठिन
उन्नति	विशाल
कारण	मरकतमणि
गिरा	अनभिज्ञ

रचनात्मक कौशल

1. सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाँ शारदा का यह स्तुति गान प्रस्तुत कीजिए।
2. सरस्वती जी को ज्ञान की देवी माना जाता है। इनकी दो शक्तियाँ कौन हैं? लिखिए।

(क) धन – _____

(ख) शक्ति – _____

सस्ता बाजार

संस्मरण

2

पाठ-परिचय

सस्ता संघर्ष सभी के जीवन के लिए अवश्यम्भावी है; किंतु कुछ लोग जो आकांक्षा कम होने कारण चलते हैं, किंतु फिर भी वे अपने अपनों को पीछा छोड़ते हैं। यही लेखिका ने अपनी माँ की आर्थिक अपनों के साथ किंचित चालाकी को व्यक्त किया है।

सस्ता बाजार यह बाजार अन्य दर, कस्बे में लगता है, जिसमें बहुधा साड़ी और कपड़ों मोलभाव करके ली जाती हैं।

"आज शनिवार है। सस्ता बाजार लगेगा।" माँ बहू में पलटिक की टोकरी को लगे गिरी कर पसारी सी कहतीं तो उनके मुख पर उल्लास की हल्की-सी यह रेखा नजर आती जिसे रोके हुए बहू-बच्चे गिर ले जाते थे। यह उल्लास दिखाई देता भी तो कैसे, उनका जीवन इतने कई संघर्षों में जो गुजर रहा था।

पति की अल्पायु पिछोपाय आर्थिक स्थिति, उस पर बच्चों की आकस्मिक दुःख-बीमारी, सम्मान में व्यवहार और अपने रीबदों सर्प, रात-दिन मेहनत और पिता के बीच बढ़ते हुए बच्चों की चिंत नई फरमाइशें।

"मेरे लिए नई फ्रॉक लाना, मुझे महीनों के जन्मदिन पर जाना है।" रोटा कहती। "मुझे स्कूल में यूनीफॉर्म के लिए और ट्रेस चाहिए।" लिखा की माँग थी।

"और मुझे नया टिफिन और पानी को ठंडा रखने वाली बोतल-" टिंकी कहती। ऐसे में माँ अलारीन का चिराग भला कहाँ से लाती? जिसमें सबकी इच्छाएँ भी पूरी हो जातीं और अपने पति से आर्थिक सर्प करने के कारण डाँट भी न पड़े।

पर अलारीन का चिराग किसी हद तक यह 'सस्ता बाजार' ही था। माँ की ठौनुली थामे मैं भी वहाँ जाती। कुबलाचार रात फाड़-फाड़ कर चिल्ला रहे होते "..... हो गया सस्ता ..... लूटो-लूटो.....।"

उनका इस प्रकार का बेसुरा राग मुझे अजीब-सा लगता था। भला कोई अपना माल लूटने के लिए क्यों कहेगा, तब मैं सोचती थी।

पर माँ बहू आत्मविश्वास से कपड़ों के ढेर में से एक लंबा टुकड़ा निकालकर कहतीं-"सस्ता से लूँगी, कितने का लगेगा?"

"मोहतो का ठाइम है, है तो सौ का, पर अभी सस्ता लगेगा, जो भी आपके लिए.....।"

किताब भला आदमी है। पर इतने लंबे टुकड़े का माँ क्या

करोगे। पूछने पर माँ कहतीं तुम दोनों प्रॉफ़ेसर बन जाओगे।" पर माँ ..... ने अच्छा नहीं लगता, तीनों बहनें एक ही प्रिंट की प्रॉफ़ ..... " पुच कर" माँ डाँटतीं और बोलचाल करती ..... "चालीस सेरी है।" माँ की बात सुनकर हक्की-बक्की रह जातीं। अम्मी के चालीस ..... ये क्या सौदा हुआ? दुकानदार अब झगड़ने पर उतर आता - "जाओ .. .. जाओ अगले बढ़ो।" अपमान से तिलमिला उठतीं; कहतीं-"माँ, मैंने कहा था न; आप गलत भाव कर रही हो..... " माँ आगे बढ़ चलतीं तो दुकानदार फिर चुकलता ..... "आ जाओ ..... ले जाओ ..... "। अब तो मुझे लगता चलो दुकानदार और माँ दोनों में हो मान-अपमान का भाव तो बिलकुल ही समाप्त हो चुका है।

माँ प्रसन्नता से मुस्ती और वह कपड़े को लेकर टुकड़ा सरीटकर ठोकरों में रख लेतीं। मैं मन-ही मन सोचती- "माँ उस चालाक बच जाएगी, जहाँ भाग्यवती दिल्ली में पैक रेडीमेड झलरों वाली सुंदर प्रॉफ़े मिलती हैं।" पर बचपन सोचों-सोचों तो बीत गया और प्रॉफ़े पहनने की उम्र ही निकल गई। वे सपना, सपना ही रह गया।

आज फिक्सा रेट शॉप पर मिला बोलचाल के दिल्ली में पैक न जाने कितनी सुंदर साड़ियों से चुकी हूँ पर फिर भी माँ के उस 'असले बाजार' की याद बार-बार लौटाँ को पिराने जाती है।

माँ की मजबूरियाँ और हमारी जरूरतें उन दिनों माँ को कितनी पीड़ा देती होंगी, यह अब समझ सकती हूँ। तभी तो माँ जाते हुए भी बाकुड़ी 'असल बाजार' जाने की बात से कितना रिझती है, गुलाबिल बन जाती चली जाती थी, बुढ़ापे उन्हें ही याद था कि घर की अनेक वस्तुओं की पूर्ति उसी तरह हो सकती है। आज भी जब मेरी हिम्मत कभी उधर से गुजरती है तो दूर तक ठोकरों लटकाए माँ का प्रतिबिंब-सा नजर आता है, लगता है यह आज भी वहाँ खड़ी दुकानदार से घोलें सस्ती लगने के लिए आग्रह कर रही है, मैं दुकान चलती हूँ माँ ..... ! पर वो सच नहीं, क्योंकि माँ अब नहीं रही।

-डॉ. गीता गुप्ती

शब्द : अर्थ

चिंतादीन	चिंता के योग्य (subject to worry)	उल्लास	उमंग (joy)
मान-अपमान	इज्जत-बेइज्जती (human insult)	प्रतिबिंब	परछाईं (reflect)
अनंत	जिसका अंत न हो (infinite)	हक्की-बक्की	हैरान (surprised)
फिक्स-रेट दाम	स्थिर मूल्य की दुकान (fixed price)	भोंदी	पहली बिक्री (first sale)
जादूगेर का पिटारा	चमत्कारी वस्तु सरलता से उपलब्ध कराने वाला (magic box)		

करें अभ्यास

पाठ से

1. उचित विकल्प चुनिए :

(क) माँ का जीवन गुजर रहा था-
सुख-सुविधाओं में
कई संघर्ष में

(ख) बच्चे माँ से करते रहते थे-
शिकायतें
छल्ला

(ग) माँ को 'आजादी के त्योहार' का लगता था-
मन
सबसे बढ़िया

(घ) माँ के पोते-पोत्र को सुरक्षा बच्चों से आती-
हक्की-बक्की
दौलती

हीरो-खुशी में
बीमारी में

फरमाइशें
हठ

मंदिर
लोक व्यवहार

उसी की
पोशाक

2. लघु उत्तरीय सवाल :

(क) माँ के चेहरे पर कब उल्लास की रेखा नजर आती थी?

(ख) माँ को किस-किस बात की चिंता थी?

(ग) यहाँ लाया जानेवाले कपड़े का लंबा टुकड़ा किस प्रयोजन से ले लेती थी?

(घ) बच्चों का कौतूहल क्यों शांत हो गया?

3. दीर्घ उत्तरीय सवाल :

सप्रसंग आशय प्रकट कीजिए-

आज जिसका रेट लाँग पर, जिस मोहल्लाके के डिब्बों में पैक न जाने कितनी सुंदर लड़कियाँ तो चुकी हैं पर फिर भी यहाँ के उस 'सस्ते बाजार' की याद बार-बार आकर आँखों को भिगो जाती है।

भाषा-अध्ययन

1. कुछ शब्द युग्मों में भयान लेकिन अर्थ में भिन्न होते हैं ऐसे शब्द युग्मिका भिन्नार्थक शब्द कहलाते हैं;

यथा–

विषय	-	विशिष्ट
भोजन	-	ग्रास
परिणाम	-	नतीजा
परिमाण	-	मात्रा

इसी प्रकार, इनके अर्थ लिखकर और स्पष्ट कीजिए

(क) सम्मान - _____

सामान - _____

(ख) निपात - _____

निर्णय - _____

(ग) सोक - _____

शोक - _____

2. पाठ में आए इन शब्दों को उचित कॉलम में रखिए।

भूमिकाएँ,	प्रतिबिंब,	किराया रेट,	कोहनी,	रिक्शा,
अनेक प्रकार,	ग्राफ़,	सिंडरेला	प्लिट,	माल,
इच्छाएँ,	नजर,	साँप		

मूल हिंदी	कोनवान की भाषा	अंग्रेजी

रचनात्मक क्रियाएँ

1. आप भी अपने किसी रिश्तेदार का संस्मरण लिखिए।

2. हिंदी भाषा में महादेवी वर्मा जी दूसरा रचना कोई संस्मरण ढूँढकर पढ़िए।

चमत्कार

कहानी

3

पाठ-परिचय

गुरुवे प्रभाकर मनुष्य धन के अनुरूप 'गगरी' में, इसीलिए उनकी कठिनाई में मानव धन का महत्व' से विशेषतया विलक्षण है। उनकी पुस्तक 'बहारी मनुष्य के आंतर्दृष्टि' को अच्छी तरह से समझा जाती है।

आवश्यकता का अविष्कार; है दुनिया की जिसी जब व्यक्ति रुपया; कोई निर्माण लोग में कठिनाई अनुभव करता है।

संध्या का समय था। प्रकाश ने अपने शिष्य वीरेंद्र को पहाड़ पर घूमने उतर जो ठाकुरगाव ने आकर कहा—"अभी न जाओ बेटा, जरा मेरे साथ आओ, तुमसे कुछ सलाह करनी है।"

प्रकाश ने मन में सोचा— आज कैसी सलाह है, वीरेंद्र के साथ मैंने क्यों नहीं कहा? बोला जाकर तब ऐसी ने कहा—"तुमसी क्या सलाह है, बोल का ध्यान कर रे? एक बहुत अच्छा घर से संदेश आया है।"

प्रकाश ने मुस्कराकर कहा—"यह तो बोल बहु से पूछिए।"

"नहीं, मैं तुमसे पूछती हूँ।"

प्रकाश ने आश्चर्यमय में पहाड़कर कहा—"मैं इस विषय में क्या सलाह दे सकता हूँ?" रोटी की बेर मानने वाले शिक्षित पुरुषों में एक प्रकार की पुरुषिया होती है, जो उन्हें अधिक काम करने से रोकती है। प्रकाश में भी यह कमजोरी थी।

बात पक्की हो गई और विवाह का साधन होने लगा। ठाकुर साहब उन मनुष्यों में थे, जिन्हें अपने जन्म विवाह नहीं होता। विवाह का सारा आयोजन प्रकाश के हाथ में था। देखते-देखते एक फर्ज़ाहाल पुस्तक तिलोत्तर पैंतीसर बन बैठा। कहाँ कपड़े बाल उसे समझ करने आया है, कहाँ खुलने का कविता सी हुए है। कहाँ गैस और शहियानेवाला खुशमय कर रहा है। किस दिन हजारों के जेवर खरीदे, उस दिन उसका मन चंचल हो उठा।

घर आकर चंचा से बोला—"हम तो यहाँ रोटियों के मोहताज हैं और दुनिया में ऐसे ऐसे आदमी पड़े हैं, जो हजारों-लाखों रुपयों के जेवर बनवा डालते हैं।"

चंचा हँसी-जिस दिनाश से बोली—डैं, हमें क्या करना है? जिन्हें ईश्वर ने दिया है, वे पहनें। नहीं तो रो-रो कर मरने के लिए ही पैदा हुए हैं।

प्रकाश—"इन्हीं लोगों की मौज है। न कमाना, न धमाना। बाप-दादा छोड़ गए हैं, मजे से खाते और पैर करते हैं। इसीलिए कहता हूँ, ईश्वर बड़ा अन्यायी है।"

चंचा—"अच्छा-अच्छा पुरुषार्थ है, ईश्वर का क्या दोष? तुम्हारे बाप-दादा छोड़ गए होते, तो तुम भी मौज करते। नहीं तो रोटियाँ चालनी पड़तीं हैं, गहने-कपड़े को कौन रोए?"

चंचा ने कहा—"कोई और बात करो, गहनों की बात सुनकर जी जलता है।"

"वैसी चीजें तुम पहनो तो रानी मालूम होने लगो।"

रात के बारह बज गए हैं, फिर भी प्रकाश को नींद नहीं आई। बार-बार वही चमकीले गहने, आँखों के सामने आ जाते हैं। कुछ बातत हो आए हैं, और बार-बार बिजली चमक उठती है।

धूप निकल आई थी। प्रकाश अभी सो रहा था कि चंपा ने उसे जगाकर कहा—"बड़ा गजब हो गया। रात को ठाकुर साहब के घर में चोरी हो गई। चोर गहने की संदूकची उठा ले गया।"

प्रकाश ने पूछे-पूछे पूछा—"किसी ने पकड़ा नहीं चोर को?"

"किसी को खबर भी है! वह संदूकची ले गया, जिसमें अदाह के गहने रखे थे। न-जाने कैसे कुंजी उड़ा ली और न जाने कैसे मालूम हुआ कि संदूक में संदूकची रखी है।"

"चौकी पर की कार्यवाई होगी। बाहरी चोर का यह काम नहीं है।"

"चौकर तो उनके तीनों पुराने हैं।"

"नियत बदलते क्या देर लगती है? आज चौका देखा, उठ ले गए।"

"तुम जाकर जरा उन लोगों की तलाशी तो दो। ठाकुरजान बेचारी से रही थीं। तुम्हारा नाम ले-लेकर कहती थीं कि बेचारा महीनों तक इन गहनों के लिए रोता, एक-एक चीज अपने सामने बँचवाई और चोर गड़ोरीचोर ने उसकी सारी मेहनत पर पानी फेर दिया।"

प्रकाश झटपट उठ बैठा और घबड़ाता हुआ-सा जाकर ठाकुरान से बोला—"यह तो बड़ा अनर्थ हो गया मालाजी, मुझसे तो अभी-अभी चंपा ने कहा।"

ठाकुर साहब सिर पर हाथ रखे बैठे थे। बोले—"कहीं सेंध नहीं, कोई ताला नहीं टूटा, किसी दरवाजे की चूल नहीं उतरी। सन्दूक में नहीं आता, चोर आया किधर से?"

ठाकुरान ने रोकर कहा—"मैं तो लुट गई चंपा, ब्याह सिर पर है, करेंगे क्या होगा?

तुमने रोद-धूप की थी, तब कहीं जाकर चीजें आई थीं। न जाने किस मनहूस समय में लगन आई थी।"

ठाकुर साहब ने गाड़ी सिकोड़कर कहा—"ऐं पुलिस में रिपोर्ट करोगे और एक-एक चीज़ की तलाशी कराओगे। कहाँ चलते हो ज़रा हमें बताओ। जब पुलिस के कुछ नहीं, तो आप ही क्यूँ होंगे।"

प्रकाश ने पुलिस का घर में आना खतरनाक समझा बोला—"पुलिस में रिपोर्ट करना और तलाशी कराना व्यर्थ है। बात तो पुलिस ने बराबर कर सकेगी हाँ, चीजों को भार पीट भले ही लोगे। कुछ गवाह भी उसे चाहिए, नहीं तो कोई दूसरा ही स्त्री वाला कह देगे। मेरी तो यही सलाह है कि एक-एक चीज़ की एफ़ार्म में बुलवाकर पूछ लाए।"

ठकुराना—"क्योंजी पर मुझे पूरा विश्वास है। किसी का पाप निकल भी जाए, तो मुझे संदेह ही रहेगा। किसी बाहर के आदमी का काम है। चाहे जिधर से आया हो; पर यहाँ आया बहार से ज़ुरूर। कोई से भी हो आ सकता है।"

ठाकुर—"हाँ आप अपने कोठे पर रहो, सावधान कुछ निशान मिले तो फ़ौरन मुझे खबर दो। खुदा चाहेगा तो यह गुत्थी सुलझ जाएगी।"

प्रकाश का दिल धड़कने लगा बोला—"मैं तो रात को ही घर से बाहर निकल जाता हूँ। कोई पहले से ही चौकी पहरा कोठे पर लगा गया होगा। मैं तो यही समझता हूँ, जो बात हुआ है।"

तीनों आदमी उस पर गए, तो बीच की ड्योढ़ी पर किसी के पाँव के रगड़ के निशान दिखाई दिए। जहाँ प्रकाश का पाँव पड़ा था, वहाँ पर चूना लग जाने के कारण छप पर पाँव का निशान पड़ गया था। प्रकाश की जान पर जोखम पहिली की घुत्थी हाथ रखा, तो बेल ही निशान वहाँ भी दिखाई दिए। ठाकुर साहब फिर कुछ खड़े थे, सोचने के सही कुछ कह न सकते थे प्रकाश ने उनके मन की बात ताड़ली—"इसमें से स्पष्ट होता है कि चोर बेल ही घर में से आया। अब तो कोई संदेह नहीं रहा।"

ठाकुर साहब ने कहा—"हाँ, मैं भी यही समझता हूँ, लेकिन इतना पता लग जाने से तो कुछ हुआ। चलो जो जाना था, सो गया। अब चलो, आराम से बैठो।"

प्रकाश—"मैं आज ही यह घर छोड़ दूँगा।"

ठाकुर—"क्यों, इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं?"

प्रकाश—"आप न कहें, लेकिन मैं तो समझता हूँ, मेरे सिर बहुत भारी अपराध लग गया है। मेरे रात्रका नौ-एक बजे के बाद घर से बाहर हो जाने से। चोर ने शायद ग्रेस देखा है, नौ-बारह दिन में फिर आ सुनो घर में अकेली एक औरत सोते थर की तिजारती नहीं कर सकती। इधर यह बात तो लोहे में बैठी है, उधर कोई आदमी चुपके से उपर्युक्त जाए, तो जरा भी आहट नहीं पिला सकती। मैं घुप-चुपाकर कभी भी कहीं आता-जाता हूँ। मेरे जैसे और आदमी की तरह मैं तो रोज होती तो रोगी। उधर का समय बोर हो जाना चाहिए। मैं तो समझता हूँ, इस चोरी की जिम्मेदारी मेरे सिर है।"

ठकुराना उठी—"तुम चले जाओगे बेचा, तब तो मेरा जान ही नहीं रहेगा।"

प्रकाश—"कुछ भी हो माताजी, मुझे बहुत जल्द ही घर छोड़ना पड़ेगा। मेरी लाचारी से चोरी हुई है, इसका मुझे प्रायश्चित करना ही पड़ेगा।"

प्रकाश ने उसी दिन यह घर छोड़ दिया। उस घर में रहना जोखिम-भरा था। लेकिन जब तक शादी की घुमधाम रही, प्रायः सारे दिन वहाँ रहते थे। चोर भी कहा—"एक मोर जो भी यहाँ काम और दिन गया है; मगर यह रुपये उन्हें के पास जमा करते जाइएगा। यह आमदनी केवल जेवों में खर्च होगी। उसमें से एक पाई भी घर के खर्च में न आने दूँगा।" घोर पाप पाकर उसी प्रति-प्रेम का यह परिचय पाकर उसके अपने मन में भी सन्तोष, रोकड़ाओं में उसकी अदाओं और भी बढ़ गई।

अब तक प्रकाश और चोर के बीच में कोई परदा न था। प्रकाश के पास जो कुछ भी था वह चोर का था। चोर के पास ही उसके बक्स, संदूक और अलमारी की कुँजियाँ रहती थीं; मगर अब प्रकाश का एक संदूक हमेशा बंद रहता था।

उसकी कुंजी कहाँ है, इसका चंचा को पता नहीं। वह पूछती है—इस संदूक में क्या है, तो वह कह देता—कुछ नहीं पुतली खिलाने वाली-मानी चिरैया माँ, उजाकर संदूक में बंद की दी हैं। चंचा को संदेह का कोई कारण था।

एक दिन चंचा पति को पान देने गई, तो देखा, वह उस संदूक को खोले हुए देख रहे हैं। उसे देखते ही उन्होंने संदूक जल्दी से बंद कर दिया। उनका चेहरा फक हो गया। संदेह का अंकुर जन्म; मन पानी न पाकर सूख गया। चंचा किसी ऐसे कारण की कल्पना ही न कर सकी, जिसने संदेह को आश्रय मिलता।

लेकिन संगीत को इस तरह छोड़ देना कि उसका मन ही न लगे, प्रकाश के लिए असंभव था। वह कहीं बाहर से आता, तो एक संदूक अवश्य खोलता।

एक दिन चंचा ने कमरे में झाड़ू लगाई, तो संदूक को खिसकाकर दूसरी तरफ रख दिया। प्रकाश ने संदूक का स्थान बदला हुआ पाया, तो शंकित होकर बोला—"संदूक तुमने हटाया?"

पूछने की यह कोई बात न थी। झाड़ू लगाते वक्त प्रायः चौकी इधर-उधर खिसकर ही जाती हैं। बोली—"मैं क्यों हटाने लगी?"

"फिर किसने हटाया?"

"मैं नहीं जानती?"

"यह मैं तुम रहती हो, जागेगा कौन?"

"अच्छा, अगर मैंने हटा दिया, तो इसमें पूछने की क्या बात है?"

"कुछ नहीं, यों ही पूछ रहा था।"

मगर जब तक संदूक खोलकर सब चीज देख न ले, प्रकाश को चैन कहाँ? चंचा नहीं तो चोकर पकाने लगी, उसने संदूक खोला और अच्छाएगी को देखने लगा। आज चंचा ने फर्सीदूर्ग बनाई थी। फर्सीदूर्ग एक तरतरी में रखी और प्रकाश को देने गई। प्रकाश ने उसको देखते ही संदूक भनाके से बंद कर दिया और जाल लगाकर उसे बहलाने के इरादे से बोला—"तरतरी में क्या रखी? अच्छा, फर्सीदूर्ग दी?"

आज पंचा को संदेह हो गया। संदूक में क्या है, यह देखने की उत्सुकता हुई। प्रकाश उसकी चाबी कहीं छिपाकर रखता था। पंचा किसी तरह वह कुंजी उड़ा लेने की चाल सोचने लगी। एक दिन प्रकाश कुंजियों का गुच्छा कंधे से निकलता। पंचा ने उस लाते की कुंजी से तो और संदूक खोल डाला। उसने एक-एक आभूषण को निकालकर देखा। ये गहने कहाँ से आए? मुझसे इनकी चर्चा नहीं की। सहसा उसके मन में भाव उठा—कहीं ये ठाकुर साहब के गहने तो नहीं हैं? चोर्ड यही भी, जिसका वह सत्कार करते रहते थे। उसे अब कोई संदेह न रहा; लेकिन इतना घोर पाप! लानत और खेद से उसका सिर झुक गया।

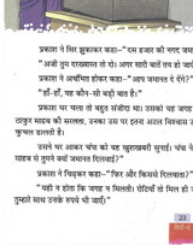

उस दिन से पंचा कुछ उदास रहने लगी। प्रकाश से उसे वह प्रेम न रहा, न सम्मान-भाव। बात-बात पर डाटता होगी। अन्याय में जो लगाता सरमाया था, वह गायब हो गया।

कई महीने गुजर गए। शहर के एक क्लब में ऑनरेरी सैक्रेटरी की जगह खाली हुई। प्रकाश इसके योग्य था; लेकिन शर्त यह थी कि नगर एस हजार की जमानत दाखिल करे। प्रकाश की जगह इतनी बड़ी रकम कहाँ से आए? प्रकाश तड़प-तड़पकर रह जाता था।

एक दिन ठाकुर साहब से इस विषय में बात चल पड़ी।

ठाकुर साहब ने कहा—"तुम क्यों नहीं दरख्वास्त भेजते?"

प्रकाश ने सिर झुकाकर कहा—"दस हजार की गहर जमानत दौलते है। मेरे पास रुपये कहाँ हैं?"

"अजी तुम दरख्वास तो दो। अगर सारी कार्य तय हो जाएँ, तो जमानत भी दे दी जाएगी। इसकी चिंता न करो।"

प्रकाश ने अचंभित होकर कहा—"आप जमानत दे देंगे?"

"हाँ-हाँ, यह कौन-सी बड़ी बात है।"

प्रकाश घर चला तो बहुत संतोष था। उसको यह जगह अब अवश्य मिलेगी; लेकिन फिर भी वह प्रसन्न नहीं है। ठाकुर साहब की सरलता, उनका उच्च पद इतना अटल विश्वास उसे आहत कर रहा है। उसकी सरलता उसके कमीनेपन को चुभन डालती है।

उसने घर आकर पंचा को यह खुशखबरी सुनाई। पंचा ने मुस्कुराकर मुँह फेर लिया। एक क्षण के बाद बोली—"ठाकुर साहब से तुमने क्यों जमानत दिलवाई?"

प्रकाश ने चिढ़कर कहा—"फिर और किससे दिलवाता?"

"यही न कहा कि जगह न मिलती। दोस्तों से दिल तो मिल जाती। रुपये-पैसे की बात है। कहीं भूत-प्रेत हो जाए, वहँ तुमको साथ उसके रुपये भी जाएँ।"

"यह तुम कैसे समझती हो कि भूत-चुड़ ग़ोती? क्या मैं ऐसा अनाड़ी?"

चंपा ने विरक्त मन से कहा—"आजी की गोपत भी ऐसा ही नहीं रहती।"

भोजन करते समय प्रकाश ने चंपा से पूछा—"तुमने क्या सोचकर कहा था कि आजी की गोपत तो हमेशा एक-सी नहीं रहती?"

चंपा ने संकट में पड़कर कहा—"कुछ नहीं, मैंने दुनिया की बात कही थी।" प्रकाश को संतोष न हुआ।

चंपा ने गला ठुंगाकर पूछा—"कुछ जबान फड़कती हो। ठाकुर साहब के यहाँ रहने से अपनी गोपत ठीक नहीं रख सके। जो आजी हमको ऊपर इतने विश्वास रखे, उसकी अंतिम बखार एक पाई भी लेना मैं पाप समझती हूँ। इस छह महीने में उन्होंने तुम्हारे साथ क्या-क्या सलूक किया, कुछ याद है? यह जमाना ही क्या कोई छोटी बात है? अपने संबंधियों तक की जमाना तो जानी? कोई लेता नहीं, तुम्हारी जमाना के लिए रुपा ठाकर रुपये लगए निकालकर दे दिए। इसे तुम छोटी बात समझते हो? यह तुमसे कोई भूत-चक्र हो जाए, तो उनके रुपये तो जरूर ही जाएँगे। जो आजी हमारे ऊपर इतना रुपा रखे, उसके लिए हमें प्राण भी देने को तैयार रहना चाहिए।"

प्रकाश चोरन कातके लेटा, तो उसकी आत्मा उसे धिक्कार रही थी। दुखते हुए फोड़े में कितना मवाद भरा हुआ है, उस क्या मालूम होता है, जब नश्तर लगाया जाता है। चंपा के तिरस्कार-भरे शब्दों ने प्रकाश के मन में गहरी उत्तेजना कर दी। वह संकुच कई पुराने भारी होकर दिल की चोटों उसे दबाने लगा।

कई दिन बीत गए। प्रकाश को बैठक में जगह मिल गई। इस उत्तमा में उसके यहाँ रहने से ठाकुर साहब, उनकी स्त्री, बीना और उसकी लड़की बहू—सभी आए हुए हैं। चंपा घोड़ा-सवाकर में लगी हुई है। बाहर दो-चार मित्र ब-कसा रहे हैं। भोजन करने के बाद ठाकुर साहब घरने को चले गए हैं।

प्रकाश ने कहा—"आज आपको यहाँ रहना होगा, मैं इस बक्त न जाने दूँगा।"

चंपा को उसका यह आग्रह बुरा लगा। घरवालों नहीं हैं, मिलकर नहीं हैं और न ही कोनी जगह ही है। उस-घर उन्हें तकलीफ देने और तकलीफ उठाने की कोई जरूरत उसको समझ में न आई; लेकिन प्रकाश आग्रह करता ही रहा, यहाँ तक कि ठाकुर साहब राजी हो गए।

बाहर बरा गए। ठाकुर साहब ऊपर सो रहे थे। बीना और प्रकाश बरामदे में थे। दोनों सिवाँ अंदर कमरों में थीं। प्रकाश जान रहा था। बीना के सिरहाने उसकी कुंडिनी में गुच्छा पड़ा हुआ था। प्रकाश ने गुच्छा उठा लिया ठाकुर साहब के घर की तरफ चल दिया।

प्रकाश लौटकर घर पहुँचा, तो बीना सोया हुआ था। कुंजी उसके सिराहने रख दी। ठाकुर साहब, प्रातःकाल चले गए।

प्रकाश संध्या समय पहुचने आया करता था। आज वह अधीरे होकर तीसरे पहर ही पहुँचा। रोकना चाहता था, यहाँ आज क्या पुत्र खिल रहे हैं।

बीना ने उसे देखकी ही खुश होकर कहा—"बड़ी मुबारक रात्रो थी तुम्हारी हमारा संकुच का संकुच मिल गया। ऐसा जीव भी नहीं खुश जैसे कैसाल रखने हो के लिए ले गया हो।"

घर लौटकर प्रकाश ने चंपा को यह खबर सुनाई, तो वह पीड़कर उसके गले से लग गई और न जाने क्यों रोने लगी, जैसे उसका बिछुड़ा हुआ पति बहुत दिनों के बाद वापस आ गया हो।

शब्द : अर्थ

चाल	गिरावट (fall)	असमंजस	उलझन (suspense)
सावधान	पूछताछ (investigation)	संजीदा	गंभीर (serious)
चाल	चालू (knife)	सच्चाई	सत्यता (honesty)
तकरार	बहस (dispute)	अचंभित	आश्चर्यचकित (surprised)

करें अभ्यास

पाठ से

1. उचित विकल्प चुनिए :

(क) लकुटराम ने प्रभात से सारा भेद खोला-बाड़ी की
- बेटे के विवाह के बारे में
- पंचायत के बारे में
- घोंट के विषय में

(ख) चंपा ईर्षा करती थी-
- पड़ोसिन से
- रोशनी से
- पत्नियों से
- मेजरी से

(ग) जेबर चुराने का रहस्य-
- पुलिस जानती थी
- केवल प्रभात जानता था
- लकुट जानता था
- लकुटराम जानती थी

(घ) प्रभात को सबसे पर गलति हुई-
- चोरी करने पर
- चंपा द्वारा चिल्लाने पर
- लकुटराम द्वारा डाँटने पर
- पुलिस के डाँटने पर

2. लघु उत्तरीय प्रश्न:

(क) प्रभात ने गहने कहाँ चुराए थे?

_____

(ख) सच्चाई का पता लगने पर चंपा का प्रभात के प्रति व्यवहार कैसा हो गया?

_____

(ग) चुपचाप हुए गहने वापिस करने के लिए प्रकाश ने क्या किया?

(घ) गहने वापिस पाकर ठाकुर ने क्या प्रतिक्रिया व्यक्त की?

3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :

संदर्भ सहित स्पष्ट करें :-

'प्रकाश से उसे वह प्रेम न रहा, न वह सम्मान-भाव। बात-बात पर तकरार होती। अन्धेर में जो पारस सदृश था, वह पारस ही न था।'

भाषा-अध्ययन

1. दिए गए वाक्यांशों के लिए एक-एक शब्द लिखिए :

ऊँचे कुल में उत्पन्न व्यक्ति - कुलीन

(क) जो शिक्षा-कानून के विरुद्ध हो -

(ख) चार रखने योग्य -

(ग) बहुत अधिक बोलने वाला -

(घ) मीठा बोलने वाला -

(ङ) जो सब कुछ जानता हो -

2. कुछ शब्दों के एक से अधिक अर्थ होते हैं, इन्हें अनेकार्थी शब्द कहते हैं। जैसे :

अंक _____ संख्या

_____ गोद

इसी प्रकार इनके दो-दो अर्थ लिखिए :

हार _____

_____

वार _____

_____

रथ _____

_____

सोना _____

_____

रचनात्मक कौशल

1. 'अच्छा व्यवहार, बुरे आचरण वाले व्यक्ति का भी हृदय परिवर्तन कर सकता है' कहानी के आधार पर निबंध कीजिए।

2. कर भला तो हो भला।
अंत भले का भला।
इस विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए।

भक्ति पदावली

पद

4

पाठ-परिचय

श्रीकृष्ण पूर्ण-पूर्ण थे भक्तों के आराध्य रहे हैं। हाँ, किसी ने उन्हें सखा रूप में देखा तो किसी ने प्रेमी के रूप में। यहाँ प्रस्तुत भक्त कवि सूरदास व मीराबाई के कुछ पद दिए जा रहे हैं—

लोक-लाज प्रश्न: किसकी खुशकर अपने प्रियतम का वर्णन करने में संकोच के मारने लाजा अनुभव करती है? यहाँ लोकलाज है?

1

मेरो तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई।
जाके सिर मोर मुकुट, मेरो पति सोई।
छाँड़ि दई कुल की कानि, कहा करिहैं कोई।
संतन ढिग बैठि-बैठि, लोक-लाज खोई।
अँसुवन जल सींचि-सींचि प्रेम बेल बोई।
अब तो बेल फैल गई, आनंद फल होई।
भगति देखि राजी हुई, जगत देखि रोई।
दासी मीरा लाल गिरिधर, तारो अब मोही।।

—मीराबाई

2

पायो जी मैं तो राम-रतन धन पायो।
वस्तु अमोलक री मेरे सतगुरु, करि किरपा अपनायो।
जनम-जनम की पूँजी पायी, जग में सभै खोवायो।
खरचै न खूटै कोई चोर न लूटे, दिन-दिन बढ़त सवायो।
सत की नाव खेवटिया सतगुरु, भवसागर तरि आयो।
'मीरा' के प्रभु गिरधर नागर, हरख-हरख जस गायो।

—मीरा

3

मैया मोरी। मैं नहिं माखन खायो।
भोर भए गैयन के पाछे, मधुबन मोहि पठायो।
चार पहर बंसीबट भटक्यो, साँझ परे घर आयो।
मैं बालक बहियन को छोटो, छीको केहि बिधि पायो।
ग्वाल-बाल सब बैर परे हैं, बरबस मुख लपटायो।
तिय तेरो कछु भेद उपजिहै, जानि परायो जायो।
यह ले अपनी लकुटि कमरिया, बहुत नाच नचायो।
सूरदास, तब बिहँसि जसोदा, लै उर कंठ लगायो।

—सूरदास

शब्द : अर्थ

कुल की कीर्ति	खानदान की शान (blush of dynasty)		तारे		उत्पन्न करते (reforming)
रत्न	बहुमूल्य मणि (precious stone)		अमोलक		अनमोल (precious)
खेवैया	नाविक (sailor)		हरख		हर्षित, प्रसन्न (happy)
पैगाम	सन्देश (news)		भेजवो		भेजवो दो (send)
बलात	जबरदस्ती (forcefully)		बाँहन		बाँहें (arms)
भेद	अंतर (difference)		पराये जाये		दूसरे का बेटा (another's son)
मोर मुकुट	मोर के पंखों से बना मुकुट (a crown made by fur of peacock)		खुटै		कम होगा (scared)

करें अभ्यास

पढ़ोंसे

1. *उचित विकल्प चुनिए :*

(क) मीरा के पति के सिर पर है–
- साफी
- मोर मुकुट
- ताज
- टोपी

(ख) मीरा उलझी-बैठती है–
- साधियों के साथ
- दुखों के साथ
- माता-पिता के साथ
- प्रभु के साथ

(ग) राम राज पर भी दुःखी–
- लिखा रहती है
- खो जाती है
- पिता-क-गिरा बहती रहती है
- चोरी कर ली जाती है

(घ) कृष्ण मुख पर माखन लगने का आरोप–
- बालाएं पर लगाते हैं
- सभी बालकों पर लगाते हैं
- राधा पर लगाते हैं
- नंद बाबा पर लगाते हैं

2. *लघु उत्तरीय प्रश्न :*

(क) मीरा के अनुसार उनका अपना कौन है?

_____

_____

(ख) मीरा ने प्रेम की बेल किसके दृगन बोयी है?

(ग) मीरा हर्षित हो–होकर किसका गान गाती है?

(घ) कृष्ण ने अपनी सफाई में क्या–क्या तर्क दिए हैं?

3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :

उत्तरमें व्याख्या कीजिए:–

(क) जनक–वचन की पूँजी यहाँ
मन में सभी सँजोती:
खरचे न खूटै कोई चोर न लूटै
दिन–दिन बढ़त सवायी।

(ख) भगति देख राजी हुई
जगत देख रोई।
यासों मीरा लाल गिरिधर
तारो अब मोही।

भाषा-बोधन

1. तत्सम शब्दों को तद्भव शब्दों से मिलाइए :

क	ख
आके	जन्म
मेरी	अनु
औदुम्बर	भक्ति
भारति	सिखाते
बहुतों	अनुरूप
अपोलक	बहुत
जनम	मेरा

2. जहाँ किसी वर्ण की आवृत्ति एक से अधिक बार होती है वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है; जैसे– "आके सिर ओर तुम्हार मेरी भक्ति सोई"

इस पंक्ति में 'म' वर्ण की आवृत्ति बार-बार हुई है। अतः यहाँ अनुप्रास अलंकार का प्रयोग है।

इसी प्रकार दिए गए पदों में से अनुप्रास अलंकार के दो अन्य उदाहरण ढूँढकर लिखिए।

_____

_____

रचनात्मक कौशल

1. दिए गए पदों को कंठस्थ कीजिए और विद्यालय के सांस्कृतिक कार्यक्रमों में गाकर सुनाइए।
2. "सिंध सोई है भाई ———— ।"

   इस पद का अभिनय मंच पर प्रस्तुत कीजिए।

आत्मविश्वास की बुलंदी

जीवन-परिचय

5

पाठ-परिचय

व्यक्ति जन्म से नहीं वरन् दुष्ट कर्म से महान् होता है। इसका ज्वलंत और आत्मविश्वास मनुष्य को उन ऊँचाइयों तक पहुँचा देता है जिसका सपना उस पेड़ने का साधारण व्यक्ति की सोच्ता भी नहीं होता—

प्रयोग गोशाला, बोधगयी, शिक्षणशाही आदि की क्रियाएँ प्रयोग करती हैं।

प्रथम विश्वयुद्ध में जैसेल के कार्य-कलापों में भ्रष्टाचार के आरोप; वह भी किसी सुदृढ़ आधार पर नहीं-राजनैतिक स्वार्थ से प्रेरित।

उत्तर देने के निर्धारित समय चार दस घंटे।

18 जुलाई, 1921 का दिन।

दस घंटे में छह हजार पृष्ठों को पढ़ना, उनमें लगाए गए आरोपों का उत्तर तैयार करके कमेटी के समने प्रस्तुत करना। यह तो उसी प्रकार हुआ, जैसे किसी से कहा जाए कि लंबे चौड़े सरोवर को चम्मच से रिक्त करो। चाहे वह दिमाग ठाकने वाला नहीं था। कमर कसकर तैयार हो गया। अपने साथियों को साथ लेकर उसने उत्तर तैयार करने शुरू कर दिए। वह जानते हुए भी कि यह कार्य असंभव है, उसने हिम्मत नहीं हारी। कौन था वह? फ्रेंकलिन डिलानो रूजवेल्ट। जी हाँ, यही था वह कर्मठ व्यक्ति।

रूजवेल्ट का जन्म हाइड पार्क, न्यूयार्क में सन् 1882 में हुआ था। पिता केम्स रूजवेल्ट ने उन्हें घोड़े पर पर और उसके बाद अच्छे-अच्छे स्कूलों में उच्च अन्य शिक्षण संस्थाओं में बढ़िया-से-बढ़िया शिक्षा दिलाई। उनका ध्यान पढ़ाई से अधिक व्यक्तित्व व चरित्र निर्माण की ओर था।

पाशाओं के माध्यम से फ्रेंकलिन की संस्था से परिचित होने का अवसर मिला। पिता के संपर्क से उन्हें जर्मनी की रेडक्रास कला का अनुभव प्राप्त हुआ। जेम्स ने हमेशा इस बात का ध्यान रखा कि फ्रेंकलिन स्वावलंबी बनें। जब फ्रेंकलिन ने अपनी सभाएँ के लिए एक भोंडा खरीदने की जिद की तो उन्हें इसी शर्त पर अनुमति दी गई कि उस भोंडे की रेडक्रास वह खुद करेंगे। इसी प्रकार बाद में जब उन्होंने एक संगठनात्मक चीज "हाउसमूट" खरीदी, तो उसका भी अधिकांश काम उन्हें खुद ही करना पड़ता था। बचपन से ही स्वावलंबन की भावना उनके कूट-कूट कर भर दी गई थी।

दुर्भाग्यवश बचपन में ही वे पोलियो का शिकार होकर दोनों पैरों पर गलत हो गए। अब अपना कार्य बैसाखियों और पहियाएं कुर्सी का माध्यम से करते थे। उनकी माँ उन्हें अधिक संघर्षपूर्ण जीवन में पर रखना चाहती थी। किंतु वे बड़े आत्मविश्वासी थे।

आत्मविश्वास के बल पर वे न केवल अमेरीका के सर्वशक्तिमान राष्ट्रपति बने बल्कि उन्होंने कठोर बनकर रेडक्रास्वियों की पूर्ण सुरक्षा का जिम्मा स्वयं अर्थात् सरकार पर लिया। इसमें अस्पतालों व निवेशों की आर्थिक व सामाजिक सुरक्षा भी शामिल थी।

पहले तो लोग उनकी इस दलील से चकरा गए। सोवियत निशि इसका विशेष कारगी रही, लेकिन कालांतर में अपने मत के पक्ष में इतना बड़ा और सफल अभियान छेड़ा कि देश की जनता ने एकमत होकर इसका समर्थन किया और जनता के दबाव के कारण सीनेट को बहुत-से नियम स्वीकार करने पड़े।

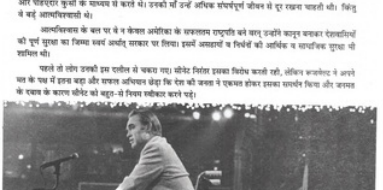

इससे हर व्यक्ति को समान दर्जा देने की ओर एक बड़ा व सफल कदम उठाया गया। कालांतर का कारण था कि नहीं अधिक जनता है और राजनीतिक कर्मचारी नहीं। वे इसी के दबाव प्रभाव किया जा सकता है। जब व्यक्ति काम करने के अवसर हो जाए-बीमारी के कारण, वृद्धावस्था के कारण, अपंग हो जाने के कारण अथवा बेरोजगारी के कारण-तब सरकार उसकी मदद करेगी। विधवाओं और अनाथों की मदद सरकार करेगी और यह सब मदद उन पर रोजी के कारण नहीं होगी। यह मदद प्राप्त करना उनका अधिकार है। इसी कारण उन्हें यह मदद मिलेगी। जब विशेषियों ने उनसे पूछा कि इसके लिए धन कहाँ से आएगा? तो उनका सीधा उत्तर था-"हम एक महान राष्ट्र के नागरिक हैं। हमने युद्धोंमें में हमेशा प्रगति की है। विश्व का सबसे धनी देश होने का बावजूद हमने एक विशाल नागरिक भूखे-नंगे हों, उनके पास रहने के लिए मकान न हों तो उसका बाप मालाल है कि हमारे पास धन का बौलाश होक नहीं? हमें उसे ठीक करना होगा।"

विस्तरित यह कहा जा सकता है कि कजकेस्त ने अमेरीका को आर्थिक मदद के माध्यम नहीं से निकालकर उसे संसार का सबसे अमीर देश तो बनाया ही साथ ही पर का विस्तरण इस प्रकार किया कि कोई भी राज्य को भुला न सके। अगर इस कार्य के आंतरिक से और कोई भी कार्य न करते, तो भी उनका नाम अमरीकी इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाता, पंचू वर्ष की अपनी इतनी भी बड़ा काम करना था।

जिस वर्ष कजकेस प्रथम बार अमेरीका के राष्ट्रपति चुने गए, उसी वर्ष जर्मनी में हिटलर चांसलर बना। हिटलर तानाशाही में विश्वास रखने वाली शक्तियों का प्रतीक था। फ्रेंकलिन रूजवेल्ट ने अपनी तानाशाही का राज्यसत्ता के पद पर किया दिया था। उन्होंने तानाशाही से स्वतंत्रता के बदले में सुरक्षा की माँगें की थी। प्रथम विश्वयुद्ध के बाद यांके व पीड़ित लोग इसने से ही संतुष्ट थे और इसी कारण तानाशाह कह रहे थे कि प्रजातंत्र असफल रहा है, सरकार का जिम्मेदार एक बोझा है, साथ उन्हीं को सौंपी जानी चाहिए जो उसका प्रयोग कर सके। तानाशाह अपने पड़ोसियों के राज्यों को जीतकर अपने राज्यों का विस्तार करना चाहते थे और अंत में पूरे विश्व पर साम्राज्य स्थापित करने का स्वप्न देख रहे थे। इन शक्तियों के विरुद्ध संघर्ष छेड़कर कजकेस्त ने भारतने में प्रजातंत्र को जमाकर बचाए रखने का बीड़ा उठाया।

कजकेस्त का कहना था कि यूरोप और एशिया में विश्वास रखने वाले राष्ट्रों को एक-दूसरे के साथ एक ही लिए लड़ाई लड़ रही है और सभी देशों को उनकी मदद करनी चाहिए। शुरू में वे अमेरीका निष्क्रियता ने कजकेस्त को बड़ा पर भारत नहीं लिया, पंचू लड़ाई की शैक्षा बढ़ने और उसके अमेरीकी हार पर पर्ल हार्बर में आ पहुँचने पर, उन्हें कजकेस्त की बात में छिपा हुआ सत्य दिखाई देने लगा। उन्होंने पूर्ण रूप से युद्ध में सम्मिलित होने का निर्णय स्वीकार कर लिया।

कजकेस्त ने अपनी दूरदर्शिता के कारण पहले ही यह भाँप लिया था कि एक दिन अमेरिका को इस युद्ध में शामिल होना पड़ेगा और इसीलए उन्होंने पहले ही तैयारी करनी पहले शुरू कर दी थी। युद्ध का बजट की दिशा में 1940 में ही करण उठाया जा चुका था। कजकेस्त ने यह सबसे बड़ा काम इसके साथ-साथ किया था, वह था—संयुक्त राष्ट्र संघ के सपने के साकार रूप देने का संकल्प। प्रथम विश्वयुद्ध के बाद "लीग ऑफ नेशन्स" की स्थापना नहीं हो सकी थी। अमेरीकी सीनेट ने उसे स्वीकार नहीं की थी। कजकेस्त ने प्रयत्न से ही ऐसे करण उठाए जिसके बाद स्वतंत्रताओं का उल्लेख था।

विचारों को प्रकट करने की स्वतंत्रता, अपने प्रकार से भगवान को पूजने की स्वतंत्रता, आर्थिक स्वतंत्रता का विश्लेषण करते हुए उन्होंने बताया कि हम दुनिया को ऐसी जगह बनाना चाहते हैं, जहाँ कोई राष्ट्र, किसी दूसरे राष्ट्र पर हमला न कर सके। इसी आधार पर सीनेट ने युद्ध में शामिल होने की अनुमति दी और इस प्रकार उन्होंने इस विपत्ति को पहले ही मान कराया लिया।

अमेरिका के यूरप में शामिल होने से पूर्व उन्होंने भिन्न राष्ट्रों से ऐसे समझौते किए, जिनमें संयुक्त राष्ट्र संघ की नींव डाली गई। अगर किसी एक व्यक्ति को इस संघ की स्थापना का श्रेय दिया जा सकता है, तो वह प्रेजीडेन्ट ही हैं। 1932, 1936, 1940 व 1944 में राष्ट्रपति चुने जाने वाले अकेले प्रेजीडेन्ट अपने अंतिम दिन तक कार्य में व्यस्त रहे जब विजय श्री बिल्कुल सामने दिखाई पड़ रही थी तथा भिन्न राष्ट्रों ने तानाशाही ताकतों की कमर पूरी तरह से तोड़ दी थी, तभी प्रेजीडेन्ट रूजवेल्ट ही गया। 12 अप्रैल, 1945 को 63 वर्ष 2 माह की उम्र में इस महान् मानवतावादी का देहांत हो गया। उसने स्वयं अपंग होने के बावजूद मानवता को अपंग होने से बचाया।

—मुंशी चंद गुप्ता

शब्द : अर्थ

कर्मठ	कर्मशील (hard-worker)	स्वावलंबन	अपने सहारे रहना (self-depended)
सफलता	सबसे अधिक सफल (successfully)	वितरण	बँटवारा (distribution)
अक्षुण्ण	स्थायी (permanent)	चरखाँसिन	मशीन द्वारा चलने वाली (mechanically operated)
दूरदर्शिता	आगे का अनुभव लगाने की दक्षता (foresight)	तानाशाही	मनमाना राज (dictatorship)

करें अभ्यास

पाठ से

1. उचित विकल्प चुनिए :

(क) कार्लटन में बचपन से ही प्रेमा पावना थी-
- कविता की
- खेल करने की
- स्वावलंबन की
- सेवा की

(ख) कार्लटन को माँ उन्हें दूर रखना चाहती थी-
- मित्रों से
- संबंधों से
- खतरों से
- पढ़ाई से

(ग) कार्लटन का जन्म हुआ था-
- विहारी में
- लंदन में
- न्यूयार्क में
- मॉन्टाना में

(घ) कार्लटन राष्ट्रपति चुने गए-
- पाँच बार
- चार बार
- तीन बार
- दो बार

2. *लघु उत्तरीय प्रश्न:*

(क) फ्रेंकलिन ने अमेरिकी को सहायता के लिए क्या किया?

(ख) कार्नवेलिस ने नागरिकों को किसने प्रकार की स्वतंत्रता दिलाने का सफल प्रयास किया?

(ग) प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान कार्नवेलिस को पीछेहा पर आदेश किसमें प्रेरित होकर लगा गए थे?

(घ) कार्नवेलिस ने अपने देश में धन के वितरण की क्या नीति बनाई?

3. *दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :*

सप्रसंग आशय प्रकट कीजिए:-

(क) उसने स्वयं अपने होंठों के कानून व्यवस्था को अपने होंठों से बचाया।

(ख) जब विजयश्री विलुप्त चमने रिश्वतों ने तो भी तथा तिन राष्ट्रों ने सम्बन्धसो ताकतों की कगर पूरी तरह से तोड़ दी थी, तभी फ्रेंकलिन का रेहाते हो गया।

भाषा-अध्ययन

1. पाठ में आए इन मुहावरों का उपयोग वाक्यों में स्वयं लिखिए :

(क) कमर कसकर –

(ख) कमर तोड़ना –

2. कमरा पदों का विलुप्त लिखिए :

विजयी — विजय + ओ

भाषणकारी —

विश्वपुरुष —

प्रकाशित —

देखभाल —

रचनात्मक लेखन

विजय में पूरे रहेन आए हैं, जिनके अनुभवपूर्ण भाषण व साहस को देखकर रोग ठा जाय चढ़ता है। ऐसा ही एक साहसका 'राष्ट्रीयिक' नाम से तैयार किया गया था। किंतु यह विस्तारकरण जहाज दुर्घटनाग्रस्त हो गया। आइए पढ़े उसके विषय में–

विश्व इतिहास में सबसे भयंकर समुद्री दुर्घटनाओं में से एक आरएमएस राइटिक जहाज 15 अप्रैल, 1912 सुबह करीब साढ़े चार हजार लगातार लापरवाही रही थी। अंततः में, एक बर्फ शिखरों से टकराने की वजह से इसे काफी नुकसान पहुँचा था। यह अपने समय का सबसे बड़ा यात्री जहाज था, जो 2,223 यात्रियों को लेकर साउथहैंपटन (इंग्लैंड) से न्यूयॉर्क जा रहा था। 10 अप्रैल, 1912 को इसने अपनी यात्रा (और आखिरी भी) शुरू की और तीन चार दिनों बाद 14 अप्रैल को एक बर्फ शिखरों से टकरा गया। इस हादसे में 1517 यात्रियों को अपनी जान गवानी पड़ी।

अमुमनी इंजीनियरों द्वारा उच्च तकनीक से बना राइटिकेक एक ब्रिटिश कंपनी हवाईट स्टार लाइन शिपयार्ट में तैयार किया गया था। उसमें विलासिता का ऐश्वर्य लोई पीनी (हवाईट स्टार लाइन और जहाज यात्रा के संचालक), नीलेश वानमुकार मोलेज, पोइल, पालकेटर्स कालीन और उनकी टीम को जहाज में आरामदेह की साज-सज्जा, उपकरण, जीवनरक्षक नौकाओं की व्यवस्था के लिए सब की जिम्मेदार बनने जैसी व्यवस्था की जिम्मेदारी दी गई थी, पर यह 1910 में इस प्रोजेक्ट से अलग हो गए।

अमेरिकी कंपनी जे-पी. मॉरगन और उसकी सहायक इंटरनेशनल मर्चेन्टाइल मैरीन कंपनी ने इसे निर्मित किया था। ऐतिहासिक अन्य सभी प्रतिस्पर्धी जहाजों से ज्यादा भव्य था। यहाँ प्रथम श्रेणी वाले यात्रियों को तिमंजिले पुल, व्यायामशाला, एक स्वागत कोर्ट, तुर्की और इलेक्ट्रिक बाथरूम जैसी सुविधाएँ दी गई थीं, और कपड़ों को खरीद फरोख्त से सजाया गया था। पुरुषजहाजों और सैलून जैसी सुविधाएँ भी प्रथम और दूसरी श्रेणी के यात्रियों को दी गई थीं। इसके अतिरिक्त तिलर, चार चालित जेनेरेटर, दूसरे जहाजों से संपर्क करने के लिए मार्कोनी टेलिग्राफ जैसी व्यवस्थाएँ भी मौजूद थीं। इस हादसे पर 1997 में जेम्स कैमरन ने ऐतिहासिक फल से ही एक फिल्म भी बनाई।

यद्यपि महान कभी-कभी सफल होते-होते रह जाता है, किंतु इससे इसके अर्थ व महत्व का सम्मान कम नहीं होता।

(क) आप भी किसी ऐसी साहसिक सफलता को खोजिए और उसे अपनी डायरी-पुस्तिका में लिखिए।

_____

_____

_____

_____

_____

(ख) विशेष प्रशिक्षण सामग्रीयों के कुछ चित्र यहाँ चिपकाइए-

साबुन

कहानी

6

पाठ-परिचय

पारिवारिक जीवन में अनेक खट्टे-मीठे अनुभव होते हैं, जो कुछ सिखाते भी हैं और पुरुषार्थ भी है। ऐसे ही अनुभवों का आधारित है प्रस्तुत कहानी।

चालीसौरी यह एक प्रचलित बोलचाल का शब्द है जिसका प्रयोग प्रायः अवसरों में क्रोध प्रकट करने के लिए किया जाता है।

सुखदेव ने जोर से चिल्लाकर पूछा—"मेरा साबुन कहाँ है?"

श्यामा तुरंत बंगले में थी। साबुनदानी हाथ में लिए लपक आई ओर रेशर के पास खड़ी होकर हौले से बोली—"यह ले।"

सुखदेव ने एक बार अंगुली से साबुन को छूकर देखा और थर्ड चढ़ाकर पूछा—"तुमने लगाया था, क्यों?"

श्यामा हौले से बोली—"जरा मुँह पर लगाया था।"

"कर्ज तुमने मेरा साबुन लिया? तुमसे हजार बार मना कर चुका हूँ, लेकिन तुम तो बेहया हो न।"

"गलती मान तो! समझो?"

श्यामा ने डिब्बी वहीं जमीन पर पटक दी, और तेज कदमों से बाहर जाती-जाती बोली—"जरा साबुन चू लिया तेरे, तो मानो गजब हो गया।"

सुखदेव ने वहाँ से चिल्लाकर कहा–"खबरदार जो अब कभी मेरा साबुन छुआ!"

औरतों पर तलवारें चल रही थीं। श्यामा भूत-भूत करती, डबडबा हताश कातुहल से उसी लोट-पोट करने लगी, तो देखा तलवारों आपो में ज्यादा जान नहीं है। उसने कहाँई उछाला बीच जमीन पर पटक दी।

"खाक हो गई नमकीनी?" तलवारों की चिल्लाहटों, ज़ोरदार ठहाकों बोलीं।

तभी उधर ठन्न से लोटा गिरने की आवाज हुई। श्यामा ने चौंककर देखा, बाहर लड़का बालटी खींचकर बाहर लिए जा रहा था। चिल्लाकर कहा–"कहाँ लिए जा रहे हो, अभागे?"

"नानीजी," लड़का शांत भाव से जमीन पर बालटी घसीटता बोला–"आज जो ने कहा है।"

उसने लड़के के हाथ से बालटी छीन ली और तेजी से भागकर बालटी गुसलखाने के आगे रख आई।

सुखदेव जोरों भाँतिये को साबुन चिटाकर उसके सिर पर साबुन मल रहा था। भाभी को देखकर बोला–"काला कर दिया साबुन! चेहरे का रंग तक इसमें काली भाई जैसा है!"

श्यामा ने चिल्लाकर पूछा–"मैं काली हूँ?"

सुखदेव ने बोला। बच्चे के सिर पर साबुन मलता रहा।

श्यामा ने बालटी वहीं पटक दी और चढ़ी स्वर में पूछा–"मैं काली हूँ? मैं काली भाई हूँ?"

सुखदेव ने घबराकर कहा–"धीरे बोलो! भाई साहब आ गए!"

श्यामा ने चौंककर, उधर देखा। कमरे के दरवाजे पर पति के जूते चमक रहे थे।

उसने जल्दी-जल्दी हाथ धोलाए। फिर धोती पोंछकर पति को आवाज दी–"आओ!"

क्रमशत्ता ने अवाक पर बैठकर भोजन पर एक नजर डाली और पूछा–"आज तरकारी नहीं बनी?"

"नहीं।"

"यह ज़ायती में क्या है?"

"बहुत्ता है। तलब के लिए रख दिया है। पात से खाओ।"

पति ने आज्ञा मानकर, एक ग्रास मुख में दिया और शांत-भाव से बोले–"नमक लाओ।"

"क्या कम है?"–श्यामा ने नमक की कुचली भाती में छोड़ते हुए पूछा।

"बिल्कुल नहीं है।"

"क्यों झूठ बोलते हो?–मैंने नमक डाला था। शर्त लगाती हूँ।"

पति ने हँसकर कहा–"यही सही। लेकिन अपनी कुसरत चखो, तो पतीली में नमक पीसकर डाल दो। सुखदेव अभी खाने बैठेगा, तो फिर आकर आ जाएगी तुम्हारी।"

श्यामा ने स्वर को चढ़ाकर कहा–"क्या आफत आएगी? फाँसी दे देगे मुझे? मैं दाशी हूँ ये समझो!"

क्रमशत्ता ने हँसकर कहा–तुम राक्षसी हो। लाओ, रोटी दो दो।"

ये कपड़े पहनकर ऑफिस जाने को तैयार हुए, तो श्यामा ने चौंककर पकड़े-पकड़े कहा–"मुझे साबुन चाहिए।"

"साबुन?"–पति ने अवाक से कहा–"किया साबुन! सुखदेव से कहो। छाता लाओ। वह फाइल उठाना!"

तभी सोहोपर में एक चुकार आई—"भाभी, खाना परोसो!"

फिर दो पालती आवाजें एक साथ आईं—"भाभी, खाना परोसो।"

बड़ा लड़का अलग थाली में खाता है। दोनों अपने चाचा जी के साथ से खाता है तीनों पास-पास, नहाए-धोए, आसनों पर बिछाये, भोजन कर रहे थे?

बड़ी लड़की ने मुँह बिचकाकर कहा—"दाल में इतना नमक है कि पूछो मत।"

श्यामा ने उठते-उठते रोस की ओर देखा। पर सुखदेव ने नमक के बारे में कुछ शिकायत न की, उलटे भतीजे को डाँटकर बोला—"खाओ चुपचाप! फिर भाभी के आगे प्याली सरकाकर, बोल—"लाओ और देख, भाभी।"

भाभी ने हँसकर कहा—"लाकरी अब नहीं है।"

"सब खाता?"

"यह देखो," कड़ाई अगले खाँचाकर, हँसकर कहा—"खा गई सब।

यही इतनी बची थी, सो तुम्हारे लिए छाँटकर निकाल ली थी।"

"देखें, जली हुई का स्वाद देखें।"

श्यामा ने कड़ाई पीछे करके, कहा—"यह तुमसे खाने के काबिल नहीं है। लो दाल और ले लो।"

बड़ी लड़की ने कहा—"मैं थी दाल और लूँगा।"

श्यामा ने पहेली उसके आगे सरकाकर कहा—"लो, दाल लो।"

लड़का पहेली में झाँककर बोला—"कहाँ है इसमें दाल?"

"दाल नहीं है। अब तू मेरा सिर खा लो, पेटू।"

छोटे भतीजे के जूठे हाथ धोकर सुखदेव कलेजे के कपड़े पहनने लगा, तो कमीज में एक ही बटन बचा पाया।

झुर्री-डोर और बटन हाथ में लिए, भाभी के आगे आ खड़ा हुआ। श्यामा बात में पटोखर खाना शुरू हो कर रही थी। सुखदेव ने कमीज उसकी गोद में रखकर कहा—"जल्दी, भाभी, जल्दी!"

भाभी जल्दी-जल्दी बटन टाँकने लगी। और तब सुखदेव की नजर भाभी के पोरों हुए चेहरा पर गई लाकरी, जो जलकर काली हो गई थी, अकेली-अकेली थाली में सजी थी।

तभी भाभी ने कमीज देते हुए कहा—"लो, थामो। अब मुझे भी पेट में कुछ डाल लेने दो।"

बड़ा भतीजा बाहर रास्ताने पर खड़ा था। उसके स्कूल की आज छुट्टी थी। कलेजे जाने लगा, तो सुखदेव उसका हाथ पकड़कर खींचता हुआ ले गया जल्दी-जल्दी बड़ी दूर तक।

बार गिनर बाद लड़के ने रही का कुतरा माँ के आगे धरा।

श्यामा उस जली लाकरी से रोटी खाए जा रही थी। रही देखकर अचकत से पूछा—"कहाँ से ले आया?"

लड़का बाहर को भागता-भागता बोला—"चाचा जी ने दिया है।"

एक रुपया या रुपाया के पाव और उसी रुपये को तिरा-तिरा सारे दिन घूमती रही कि आज साबुन मँगवाकर छोड़ूँगी। पर ऐसी लकदार किरी की कोई न मिला साबुन लाने वाला। तब खीझकर, कई लड़के को समझा-बुझाकर, गली के मोड़ वाली दुकान पर चेला साबुन लाने और संतोष की साँस लेकर बोली मन-ही-मन कि 'साबुन अपनी नई टिकड़ी से नहाऊँगी, तो देखूँगी, तो देखूँगी तोज लगाऊँगी साबुन'।

पर लड़के की अक्कल पर पत्थर पड़ गए। दो आने का कपड़े धोने का बदसूरत साबुन और चौदह पैसे माँ के सामने रखकर चला गया।

रुपाया ने यह दो आने का साबुन उठाकर बोले में फेंक दिया और लड़के को कोसती रसोई बनाने लगी।

आध घंटे बाद पति आ पहुँचे और उसके आगे रुपाया खाना तैयार हो चुका था। पति के कोई दिन आ गए थे और बातों की झड़ी लगाए थे। रुपाया दस बार उस कमरे के रास्ते से गुजरकर लौट आई और दो बार लड़के को भी भेजा। कमरतान ने कहा—"आते हैं।" पर वह बहुतों भाग आदमी न उठा, न उठा।

हारकर रुपाया ने देखा से कहा—"लल्ला, तुम तो खाओ। वे तो आज बातों से ही पेट भरेंगे।"

रुपाया पानी लेकर लौटी, तो सुखदेव खा चुका था। अचानक से बोली—"यह चुके दो पराठों से ही पेट भर गया?"

पर सुखदेव ने जल्दी-जल्दी पानी पिया और जल्दी-जल्दी कमीज पहनकर पैरों में चप्पल डालकर, खड़ा हो गया रसोईघर के सामने।

रुपाया जूती भालो लेकर बाहर निकली और उसे यों खड़ा देखा तो रुक गई।

सुखदेव ने हौले से कहा—"भाभी!"

भाभी होले से बोलीं—"क्यों, क्या है?"

"भाभी, आज बहुत अच्छी किराय आई है।"

"तुम जा रहे हो?"

"देखे नहीं हैं।"

भाभी ने सोचकर, कहा—"चौदह आने से काम चल जाएगा? चौदह आने हैं मेरे पास।"

"लाओ, लाओ।"

रुपाया ने भालो खोरें रखा दी और दौड़ी जाकर जब्बा में से चौदह आने निकाल लाई और देखा की जेब में वे चौदह आने डालकर बोली हौले से—"यह उधार वाली कुंजी खरखराएगा। मैं जानती हूँ।"

प्रियंवदा से सुखदेव का परिचय था। दो साल पहले वह एक लड़की को पहुंचने जाने लाया था। वहीं प्रियंवदा से प्रथम साक्षात्कार हुआ था। फिर वह परिचय प्रगाढ़ होकर रूप बदलते लगा और स्नेह की कली होने लगी।

एक दिन सुखदेव ने गुपचाप में दूर से प्रियंवदा के दर्शन भी कर लिए भाभी को। घर लौटते लगे तो रात में भाभी चलते-चलते बोलीं—"वे भगवान वहाँ तुम्हारी प्रियंवदा हैं। कल की जोत लिए वहाँ गुपचाप को चकारभौंच किए थी। हाय राम, मैं तो उसके पैरों की धोवन भी नहीं हूँ। कैसी उंडारी का पाजौरी? मुझे देखकर हँसेगी।"

सुखदेव सुस्कर हौले से बोला—"गला कार हूँ।"

भागी बोली—"किसका गला कार लोगे? बोरा?"

सुखदेव कुछ न बोला।

उंट पड़ने लगी थी और सुखा तड़के-तड़के नाहकर रसोई पकाते जब श्यामा कीचकौंचे लगने लगी, तो उसने चार कांके रेखा का बस्ता खोलकर चार पुराने स्लेट निकाल लिये जिसे कोई ने जगह-जगह काटकर तख्त-तख्त के आलपन और गमछा बना दिए थे, हवा के आने-जाने के लिए!

उसी स्लेट को रोज सुबह पोत लेती और गामी पाकर कहती कि 'चलो, अच्छा है। यह जाड़ा मजे से काट देगा।'

रात को दिलेगा रेखा सुखदेव ने और सुबह सूरज चढ़े तक गहरी नींद ले। फिर भी रेख का अहसास न गया। एक जमाहाई लेकर उसने चारों के सोलर, चलो, चलो पी आएँ।"

तड़का कुरकार बोला—"चाचा जी, बिल्कुल भी खारीपे ना?"

सहसा सुखदेव को चार आना फिर याद आने के कारण वो उसने अपना स्लेटर देने का वायदा किया था। वह बस्ता खोलकर पुराना स्लेटर खोलने लगा। पर स्लेटर न मिला। एक-एक कागज सारे कपड़ों बाहर निकालकर फेंक दिए। पर स्लेटर के दर्शन भी न हुए। कहाँ गया?

भागी रसोईघर में बैठी एटा बीन रही थी। उसने आकर पूछा—"मेरा स्लेटर था एक पुराना?"

"यह मैंने ले लिया।"

"तुमने कैसे ले लिया?"—सुखदेव ने साथ पर बल डालकर कहा—"तुमने क्यों मेरा कमरा खोला? क्यों ले लिया मेरा स्लेटर?"

भागी ने शांत स्वर में कहा—"बेकार पड़ा था, इसलिए निकाल लिया।"

सुखदेव ने स्वर को तीव्र करके कहा—"मुझसे बिना पूछे तुमने कैसे ले लिया? तुम मेरी चीज क्यों छूती हो?"

भागी सुस्कर चुप रही।

सुखदेव ने उसी स्वर में कहा—"चलो अपने कमरे में। लाए देती हूँ स्लेटर।"

"यहीं लाकर दो। अभी, फौरन!"

भागी ने हाथ को पीठ कारके स्लेटर उतारा, फिर उधर को मुँह कारके शांत स्वर में कहा—"यह लो।"

सुखदेव क्रुध था चौकन्ना-सा खड़ा रहा। स्लेटर वह सामने पड़ा था और भागी फिर झुकाए, फिर दाल बीनने लगी थी। सुखदेव स्लेटर उठाने लगा, तो एक बार भागी के झुके मुख को और देखा। औरों से अधिक रहा से भागी थी।

ब्रह्मचारी ने खाना समाप्त करके पानी पिया और उठ गए। भट्ठी की ओर देखते गए और कपड़े पहनने गए। फाइल दौपाली और सोती में अपना मुँह देखा और बाहर को बढ़ें कि श्यामा ने रास्ता रोककर कहा—"बीर लिए एक स्लेटर ले दो।"

"स्लेटर?—पति ने झिड़की देकर कहा—"क्या कह रही हो? मुझे आफिस के लिए देर हो रही हो और तुम स्लेटर की फरमाइश कर रही हो। सुखदेव से कहो।"

श्याम ने सिर झुकाकर कहा—"तो मुझे कुछ रुपये दो आज! मैं पौंखा लूँगी। किसी को।"

"किसी से क्यों?"—झलाता ने जल्दी से एक दस रुपये का नोट निकालकर कहा—"सुखदेव से आएगा। लो, भागो। हटो कहाँ सुखदेव?"

सहसा कई लड़के ने हाँकते हुए आकर, माँ को एक कागज दिया और बोला—"लो पढ़ लो। चाचा जी ने दिया है। लो, पढ़ाओ तो यार। जवाब लिखो।"

श्याम ने हाथ का काम रोककर, अचानक से यह कागज पढ़ा। सुखदेव ने लिखा था—

"सुहाने प्रोपेसर शर्मा की एक किताब खो गई है। आज उन्होंने अपनी किताब माँगी है। बाजार से खरीदकर ले जाऊँगा। साढ़े-दस रुपये चाहिए। आप किसी से उधार दिलवा दीजिए। मैं सुबह से रुपये के लिए कोशिश करता रहा, पर कहीं नहीं मिले। आप कहीं से दिलवा दीजिए। भाई साहब से न कहिएगा, आप को मेरे सिर की कसम है। इति।"

श्याम ने उसी कागज को पीठ पर लिखा—

"मेरे पास दस रुपए हैं। आप चाहें, तो ले सकते हैं। आठ आने का इंतजाम कर लीजिए।"

रोबदार बड़ी दीदी भाइयों का नियम-था था कि सुबह नाश्ता करके निकल जाते थे—दोनों में और पोपहर को बाहर-एक बजे तक लौटते का नाम न लेते। यही आज भी हुआ।

श्याम को दिनभर के घर जाना था। उसने जल्दी-जल्दी रोटी खाई, फिर सब संभाल-सुधर कर वहाँ जाने की तैयारी करने लगा। तीनों के बाहर से चाहते हुए भी—मीरां के पास तक कालिख लगी दिखी। हमेशा से स्वाहस्त उस कालिख को मिटाने लगी, आँखें सोचकर काजों से तक रगड़ा। फिर जो आँखें उपचारा तीनों में देखा तो मनाना हो गया। सारा चेहरा काला हो गया था। सारे चेहरे पर यह कालिख फैल गई थी।

श्याम ने घबराकर चारों ओर नजर दौड़ाई कि कोई देख तो नहीं रहा है। फिर जल्दी से साबुनदानी उठाकर मुसलमानों की ओर भागी गई।

मुख धोया साबुन से, हाथ धोए साबुन से। फिर पैरों की ओर नजर गई तो पैर भी बहुत गंदे दिखे। तब फिर पैरों पर भी साबुन लगाए बैठ रही।

आखिर मुसकराने से ही यह निरापदता छोड़ी। मुसकराना मुँह खोलकर बोला—"बैठी क्यों हो? पैर धोकर हटो न।"

तब भारी श्याम की चेतना लौटी। ओठों में तनिक मुसकराए और आगे-आगे पैर धोकर उठ आई वहाँ से। कमरे में आकर शहज़ादा से साबुन की टिकली एक कपड़े पर रख-रख कर सुखाई, फिर बाहर लेकर उन्हें साबुनदानी में रखकर ले आई।

सुखरेन पाउर खोलकर खड़ा था और उसने क्या सोचता पायी को चार को देख रहा था। खट से चाभी ने पेंटों के पास वह साबुनदानी रख दी और लौट चली लंबे हाथ भरती।

सुखरेन क्षणभर साबुनदानी को निहारता रहा। फिर उसने नोचे सुखरेन साबुन की टिकली उठा ली और फिर तेहिन-तेल से पूरा जाती चाभी की ओर वह साबुन पीक दिया जोर से।

पर साबुन चाभी के न लगा उसी क्षण ऊपर वाले मालाड़ी सेठ सामने आ पहुँचे। और जाने कैसे वह साबुन सेठ जी की ठोढ़ पर चटाक-से लगा :

"अरे, यह क्यास है?—सेठ जी नहीं पेट फफकुरा कर गए।

श्यामा ने तोड़े मुसकर देखा और सुखरेन ने भी। सुखरेन साबुन वह सेठ जी के पास पीछा आया और पोंछी हाथ से उनकी बनावटी रोइ उठाता बोला—"अभी इधर एक बोर खुरा था। मैंने देखा था, उसके हाथ में यह साबुन था।"

सेठ जी ने एक हाथ की तेज़ नज़र पर लगाई और पूरने में एक सामने पड़ा साबुन लेकर उठा ली बिलकुल तड़ा। फिर उस साबुन को लोट-पोट कर निहार और सुखरेन की ओर तिरछी नजर से ताक कर बोले—"साबुन तो सच्ची है और आगे की माल ते गया तुमुगान!"

तभी प्रियंवदा ने उसी विनय ठोन में कहा—"मैं सच कह रही हूँ दीदी ने जाने कितनी बार उनके मुँह से यह बात सुन चुकी हूँ कि मेरी चाभी के सामने लक्ष्मण की सीता भी तुच्छ हैं। कितनी ही बार तुम्हारी बड़ाई करते-करते, तुम्हारी बड़ाई सुनते-सुनते, आँखों में आँसू भर लाए हैं और यों रात्रे से कहा है कि 'भाभी' मेरी इस भाभी पाता की तरह हैं। ऐसी ही भाभी मिलतीं, ऐसी ही विनाल, ऐसी ही सुन्दरी! सुन्दरी बहनें ऐसी ही उनकी शुभिका बनकर जीवन सफल कर लेतीं और उनका अपना दुखारी जन्म-जन्मांतर के पाप धुल जाएँगे।" सुखरेन बहुत देखता था उन्हें और उन्हें अपने नयन गीले हो गए।

श्यामा ने बोली। बोल नहीं पा रही थी। उसके बोल में जाने क्या अमृत आ रहा था।

तभी शहज़ादा विनयों की नहीं ने आकर कहा—"बेटी चलो, खाना खाओ।"

.... राजाराम प्रियंवदा का बड़ा भाई था। उसकी चौथ में बहुत-सी दुकानें थीं। पत्नी उसकी मर गई थी। घर का कार्य-भार वही था।

राजाराम नव्वाब होकर श्यामा के लिए स्वयं थाली लाया था। कि वह आ पहुँची। अम्मा जी चौंक जाने क्या लेने गई कि पर-से श्यामा कड़ाई के पास आ बैठी और एक पूरी लेकर गरम घी में छोड़ दी और प्रश्न-सूचा से बोली—"आज पैया को मैं बनाकर खिलाऊँगी।"

उसी समय थाली में राजाराम पैया को हिलाता-हिलाता चूल्हे के पास से उठ आई। फिर पास बड़ी प्रियंवदा को हाथ पकड़कर सीधी दूरी बोली—"आओ सखी! पूरी तो बड़ी पूरन लगी है। अम्मा, हम लोगों को खाना परोस जाओ!"

अम्मा ने चकुआ कलेजा लिए पूछा—"तो फिर, बेटी में कल तुम को भेजूँ बड़े गुलाब पर?"

श्यामा ने भौंहें विस्मोद्धरा कहा—"कई पाचन कौन खेत की पूरी हैं अम्मा, तुम बड़ी बेटी की इनकार निपटाओगी कर? तुमारी बड़ी बेटी ने जो कुछ कह दिया, उसे पचा की तनिक समझो!"

अम्मा गौंह देखते रगड़ी "बड़ी बेटी की।"

बड़ी बेटी ने तब तनिक नाराज़-सी होकर कहा—"सूर्य कबीन नहीं हुआ क्या अम्मा? अरे, मैं बहुत दिनों से सुखरेन के साथ प्रियंवदा की शादी होगी, होगी, होगी, क्या!"...

रामशंकर भी पास आ खड़ा हुआ था। श्याम ने उसकी ओर देखकर पूछा-"भैया, अपनी दुकान पर साबुन भी बिकता है न?"

"बहुतेरा साबुन है।"

"तब एक शर्त है," श्याम ने अंगुली उठाकर कहा।

अम्मा का दिल धड़कने लगा। रामशंकर भी घबराया कि भगवान, क्या शर्त है इसकी?

श्याम अंगुली उठाकर बोली-"भैया, तुम्हें हर महीने मुझे एक साबुन की टिकली देनी होगी। बोलो हामी भरते हो?"

रामशंकर ठहाका मारकर हँस पड़ा। सारा घर हँस रहा था।

–हरिवंशराय सिंह 'निर्मल'

शब्द : अर्थ

बेहया	निर्लज्ज, बेशर्म (shameless)	प्रगाढ़	गहरा (deep)
तेज़ित वेग	तीव्र गति से (speedily)	ठहाका	जोर से हँसना (loud laughter)
जन्म-जन्मांतर के	जन्म-जन्मों के (birth after birth)		

करें अभ्यास

पाठ से

1. *लघु उत्तरीय प्रश्न :*

(क) सुग्रीव और रुमा में प्रेम किस का कारण था–

भोजन ◯ उपहार ◯

साधुत्व ◯ किष्कंधा ◯

(ख) रुमा को सिद्ध भी कि कोई उसे करे–

आलसी ◯ काली ◯

बहुमी ◯ अमा ◯

(ग) आवश्यकता पड़ने पर सुग्रीव उसे किस कारण था–

पर्वत से ◯ पर्वत से ◯

घोड़ों से ◯ भाभी से ◯

(घ) सुग्रीव ने रिश्वत को भाभी के बारे में बताया कि वे

काली हैं ◯ साधुत्व प्रेमी हैं ◯

महान हैं ◯ प्रगल्भ हैं ◯

2. *लघु उत्तरीय प्रश्न :*

(क) सुग्रीव ने भाभी को किस बात के लिए सावधान किया?

_____

_____

(ख) सुग्रीव ने भाभी के लिए रोटी क्यों भेजी?

_____

_____

(ग) रुमा ने एक गहने से क्या मँगवाने का निश्चय किया?

_____

_____

(घ) रुमाशंकर किस बात पर हँस पड़े?

_____

_____

3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :

1. संकेत आधार स्पष्ट कीजिए–

(क) 'मेरी माँगी इस धरती की तरह है। ऐसी ही सहनशील, ऐसी ही निडर, ऐसी ही महान..... उसकी सेविका बनाकर जीवन सफल कर लेंगे अपना। तुम्हारे जन्म जन्मांतर के पाप धुल जाएँगे।

(ख) "साधुत्व तो नहीं है, छः आगे का मान दे गयी हनुमान।"

2. पाठ के आधार पर स्वयं भाभी के चरित्र की विशेषताएँ लिखिए।

भाषा-बोधन

1. वाक्य शुद्धता कीजिए :

(क) इस जगती ही पर जाएगा।

(ख) मैं तो मान न चाह गई हूँ।

(ग) वह बाद उस इधर-उधर टहलता रहा।

(घ) मुझे कटाकर सेव दो।

2. कहानी में प्रयुक्त पाँच शब्द-युग्म लिखिए :

जैसे–तड़के–सवेरे _____ _____ _____ _____

3. व्याख्या :

एक बच्चे में सोलह आने होते हैं। कहानी में एक बच्चा पर भौंडा आने का जिक्र है। इसका अर्थ है, पचहत्तर पैसे। आजकल भले ही इसका प्रचलन नहीं है पर कुछ वर्षों पहले यही गण्यमान्य बोलचाल में प्रयुक्त होती थी।

4. दिए गए वर्णनात्मक शब्दों का प्रयोग करते हुए वाक्य बनाइए :

(क) दुर्बल – _____

(ख) दुत्कार – _____

(ग) उपका – _____

(घ) उसे – _____

रचनात्मक कौशल

1. 'कहानी में पारिवारिक प्रेम का वर्णन विशेष है, इस विषय पर अपने विचार प्रकट कीजिए।

2. 'परिवार में खुशहाली पारस्परिक प्रेम व त्याग से ही आती है, कहानी के आधार पर इस कथन की पुष्टि कीजिए।

आइए, कीचड़ उछालें!

हास्य-व्यंग्य

7

पाठ-परिचय

एक-दूसरे पर दोष लगाना बहुत भी एक ऐसी आदत है जिसे हमारे कुछ मध्यवर्ती हुए भी, ऐसा करने में एक विशेष आनंद का अनुभव करते हैं, इसी बात पर लेखक ने व्यंग्य किया है...

दान अच्छी है। यह एक सद्भावनीय विचारधारा है जो किसी वर्ग या समूह की अंधाधुंध गुलाम प्रसादित किया जाता है।

उन्नाव मुसीबत बैठे चाय सुड़क रहे थे। चाय पीते-पीते ही उन्होंने कहा, "यार, आज मन हो रहा है कि कीचड़ में नहाया जाए। इतना नहाया जाए कि तन-मन कीचड़मय हो जाए। बचपन में कीचड़ में लोटने का जो आनंद आता था, उसकी कल्पना भी आज के छोटे-छोटियों नहीं कर सकते हैं। सुबह हुई नहीं कि मन कीचड़ में ही लगा रहता था। एक बार कीचड़ में लोट लगाने पर पूरी दो घंटात का नशा चढ़ जाता था। हालाँकि उस घंटात का नशा क्या होता है, नहीं जानता था। कीचड़ में लोट लगाकर आते ही सबसे पहले अम्मा पीटती थीं, बड़े भइया कान खींचते थे, दीदी चपत लगाती थी। फिर पहला-धुलाकर साफ कपड़े इस निर्देश के साथ पहनाए जाते थे कि खबरदार! जो कपड़े पर एक भी दाग लगा! तब कपड़े, पर एक भी दाग का मतलब था, पिटाई।

उस्ताद की बेगमात की बात सुनकर मुझे हँसी आ गई। मैंने कहा, "आज यह आपको कौमद्-पुराण सुनने की क्या सूझ पड़ी?" उस दग्ध का मतलब कुछ होता था, चाहे वह चरित्र पर हो, या कपड़े पर। उन दिनों 'दाग अच्छे हैं' वाला विज्ञापन जो नहीं आया था। बाद में जब यह चिज़रानी सूत्र चाचर्य हुआ, तो राजनीति वालों ने एहतियात कर लिया और आज देखो, हर तरह बेदाग़ हो गयाहै। हो, लेकिन दूसरों पर कौमद् उछालकर उसे भी दागदार कर रहा है। मालाब अब बेदाग की कोई कौमद राजनीति में नहीं रही।

"हाँ यार ..... तुम्हारी बात बिलकुल सही है। आज तो जिसे देखो, भ्रष्टाचार के दलदल में लोट लगा रहा है। बड़े-बड़े पदों पर गरीबा चेहरों की ही पूछ है। अब तो इस बात पर शर्म आती है कि मुझ पर किसी तरह का दाग नहीं है, न आपराधिक, न आर्थिक और न ही चारित्रिक। हमारा पूरे जिंदगी बेकार में गुजार दी" मुजाहिद लगातार बड़बड़ाये जा रहे थे।

मैंने अपने नाक पर बैठी मक्खी को उड़ाते हुए कहा, "बात तो उस्ताद आप ठीक कह रहे हैं। मुझे तो भ्रष्टाचारी और भ्रष्टाचार का विरोध करने वाले दोनों एक जैसे लगते हैं। आज आप जिस व्यक्ति को बेगम बनाकर उसकी प्रशंसा में कसीदे पढ़ रहे हैं और कल पता चले कि उसकी बीवी रिश्वतखोर, भ्रष्टाचार की गंगोत्री में यह खुब नहा-धो चुका है, तो आप क्या कर लेंगे? इसलिए मेरे तो दोनों हाथ के लोगों में फर्क करना ही छोड़ दिया है।"

मेरी बात सुनकर मुजाहिद मुस्कराते हुए बोले, "सारा में सोचता, हूँ कि हमें एक राष्ट्रीय कौमद् दिवस मनाना चाहिए। इस दिन सभी एक-दूसरे पर कौमद् उछालें और अपनी सुविधा को कौमद से धो डालें। इतना कहकर वह मुझ पर कौमद् उछालने लगे।"

—अशोक मिश्र

शब्द : अर्थ

भ्रष्टाचार	बेईमानीपूर्ण आचरण (corruption)	चारित्रिक	चरित्र संबंधी (related to character)
शुचिता	पवित्रता (purity)	चर्चित	चर्चा में आए (smeared)
निर्देश	दिशानिर्देश (indication)	पहनाए	गले लगाए, अपनाए (adopt)
छोरे-छोरी	लड़का-लड़की (boys-girls)	चपल	चौंदा (slap)

करें अभ्यास

पाठ से

1. उचित विकल्प चुनिए :

(क) उस्ताद मुजाहिद का मन कर रहा था-

- चाय पीने का
- मिष्ठ करने का
- कौमद् में नहाने का
- टिल्ले का

(ख) बचपन में कपड़ों पर दाग लगने पर होती थी–

घुपचुप | पुलकन
डाँट-डपट | पिटाई

(ग) उत्तर की पंक्ति को लेखक ने कहा–

कथा-पुराण | महाभारत
रामकहानी | कौथड़-पुराण

(घ) उत्तर बुआजी ने सुझाव दिया कि हमें अलग चर्चाएँ–

बात दिवस | घुपचुप दिवस
दाग-दिवस | कौथड़-दिवस

2. *लघु उत्तरीय प्रश्न :*

(क) आज के डाँट-डपटी किस बात की कल्पना भी नहीं कर सकते?

(ख) बचपन में कौथड़ में लोट लगने पर भाषण, रोटी और अन्नमा क्या करते थे?

(ग) उत्तर को समय पर क्यों शर्म आ रही थी?

(घ) लेखक ने कैसे लोगों में फर्क करना छोड़ दिया है?

3. *दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :*

सप्रसंग व्याख्या कीजिए–

" आज देखो हर नेता खुद को राजगद्दी है ही, लेकिन दूसरों पर कौथड़ उछालकर उसे भी राजगद्दी बना रहा है। मतलब अब बेईमानी की कोई कौथड़ राजनीति में नहीं रही।"

भाषा-बोधन

1. 'क' वर्ग वर्ण उच्चारण हेतु। 'क' उपवर्ग लगाते हुए पाँच शब्द लिखिए :

_____ _____

_____ _____

_____ _____

2. पढ़िए और समझिए :

(क) अवस्थी, पृथ्वीश, अर्चनाश्रम।

(ख) गिरा, गवाँ, आलोचना।

(ग) कथन, सुरान, मानसरोवर।

(घ) शर्म, लग्न, संबोध।

3. उचित स्थानों पर विसर्गादिलोक चिह्न (।) लगाइए :

(क) बच कहा वह भगा है।

(ख) सावन तुम बड़िया खेतो।

(ग) सुनिए जरा पीछा तेज कर दीजिए।

रचनात्मक कौशल

1. लिख पर आधारित कोई अन्य हास्य-व्यंग्य पढ़िए।
2. कबीरदास जी ने लिख के विषय में अनेक दोहे लिखे हैं। उन्हें ढूँढ़िए और लिखिए।

_____

_____

_____

_____

_____

_____

_____

8

जंगल करे गुहार

कविता

पाठ-परिचय

आज चारों ओर बड़ी-बड़ी इमारतें बन रही हैं, इसके लिए जंगलों को बड़ी बेदर्दी से नष्ट किया जा रहा है जोकि मनुष्य को भविष्य में संकट में डालने वाला काम है। इसी विषय पर कवि ने अपने उद्गार व्यक्त किए हैं–

वन-जीव कुछ प्राणी केवल जंगल में ही अपना अस्तित्व कायम रख सकते हैं। ऐसे जीव ही वन-जीव हैं।

दूर शहर की चिमनियाँ, देतीं वे आवाज़।
जैसे बोझी पी रहे, बूढ़े कई उपवास।।

आरी ने घायल किए, हरियाली के पाँव।
कंकरीट में दब गया, होरी वाला गाँव।।

वन-जीव मिटते रहें, कटते वृक्ष दिन-रात।
मिट जाएगी एक दिन, खुद आदम की जात।।

शब्द : अर्थ

आभास	प्रतीत (look like)	होरी	प्रेमचंद का एक प्रसिद्ध ग्रामीण पात्र (a character in Premchand's literature)
परंपरा	रिवाज (tradition, custom)	गुहार	विनती (request)
प्रेत	भूत (ghost)	रहम	दया (grace, pity)
पैनी	तेज (sharp)		

करें अभ्यास

कविता से

1. **उचित विकल्प चुनिए :**

(क) शहर की चिमनियों से निकलते धुएँ की उपमा कवि ने की है–
- बादलों से
- भूत से
- कोहरे से
- घुंगरुओं से

(ख) अतो ने किसके पाँव पालना का दिए–
- मानुष के
- हाथियों के
- जानवरों के
- पक्षियों के

(ग) कवि ने रहम करने की प्रार्थना की है–
- बच्चों पर
- बड़ों पर
- भली अवस्था पर
- जानवरों पर

(घ) विकास के नाम पर होने वाले अत्याचारों के कारण कवि ने उसकी उपमा की है–
- रक्षस से
- प्रेत से
- परियों से
- पनडेडी से

2. **मिलान करवाइए :**

	सच ✓	झूठ ×
(क) कवि ने इस कविता में एक सपना को उठाया है।		
(ख) कविता की भाषा शुद्ध संस्कृतनिष्ठ हिंदी है।		
(ग) कवि ने हाथियों भगवते का मंदिर दिया है।		
(घ) कवि अनुशिक्षा विकास से संतुष्ट है।		
(ङ) पेड़ों के काटने का प्रभाव केवल पक्षियों पर पड़ता है।		

भाषा बोधन

1. युक्त मिलाइए :

आकाश - ——आसमान——

हृदय - _____

चौक - _____

तुलना - _____

खेत - _____

2. सुमेल कीजिए :

'अ'	'ब'
खेत	कीचड़
हृदय	आग
चौक	चतु
सौभाग	मनुष्य
अहरण	खेत

3. व्याख्या :

प्रस्तुत कविता आधुनिक कविता के अंतर्गत आती है, इसमें नई नई कल्पनाएँ, उपमाएँ व काव्य गुणादि का प्रयोग है। दोहों की भाँति दो-दो पंक्तियों में अपने विचार प्रकट किए गए हैं।

रचनात्मक कौशल

(क) पर्यावरण संरक्षण– इस विषय पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

(ख) काव्य कीजिए – 'यदि सभी संतुष्ट समाज हो जाएँ तो धरती पर क्या-क्या परिवर्तन आएँगे।

अब नहीं आती गौरैया

लेख

9

पाठ-परिचय

कभी छोटे खलिहानों से लेकर हर कच्ची रिश्ता जाने वाली हमारे घर आँगन में चुपकाने पक्षी-सी चिड़िया, गौरैया आज संकटग्रस्त पक्षी है और पूरे विश्व में तेजी से दुर्लभ हो रही है। एक दो दशक पहले तक गौरैया झुंड के झुंड घर्मकीलाल शहरों और हमारे घरों की छिड़कियों, चबूतरों यहाँ तक कि कमरों के अंदर भी देखी जा सकती थी। पर खुर को पारिस्थितियों के अनुकूल बना लेने वाली यह चिड़िया भारत ही नहीं, यूरोप के कई हिस्सों में भी अब काफी कम रह गई है। वीरतौर्ज में तो इसे दुर्लभ प्रजाति के वर्ग में रखा गया है। ब्रिटेन प्रोग, जर्मनी, चेक गणराज्य, इटली, फिनलैंड और नीदरलैंड में भी इसकी संख्या तेजी से गिरी है।

भारत में गौरैया के कई नाम हैं; जैसे- गौर और चटका; तामिलनाडु तथा केरल में इसे 'कुरुवी' कहते हैं, आंध्र प्रदेश में 'गोरुपुल्ल', कर्नाटक में 'गुब्बची' तथा गुजरात में 'चकली' कहते हैं। महाराष्ट्र में इसे 'चिमणी', पंजाब में 'चिड़ी', उड़ीसा में 'घरिया' बंगाल में 'भरत पाखी' तथा उत्तरांचल में 'भाचरिया', उर्दू में इसे 'चिड़िया' तथा सिंधी भाषा में 'झिरकी' कहा जाता है।

घरेलू गौरैया 'पासेराडाई' परिवार की सदस्य है। कुछ लोग इसे बुनकर पिंच परिवार से भी संबंधित मानते हैं। इसकी लंबाई 14 से 16 सेंटीमीटर होती है, जबकि इसका वजन केवल 26 से 32 ग्राम तक होता है। प्रजनन अवधि में इसके नर से कम तीन बच्चे होते हैं। यह सामान्यतः पक्षी है और अधिकतर झुंड में उड़ती है। एक झुंड से तेज से दो मील की दूरी तय करती है। भोजन तलाशने के लिए यह अधिक दूरी भी तय करती है। घरेलू गौरैया घरेलोंकी प्रकृति वाली होती है। यह कुएँ में भी अपना आहार ढूँढ़ लेती है।

संकटग्रस्त खतरे में पड़ना हो संकटग्रस्त होना बताता है, और जो बात है कि आज जीवन का मुख्य-चौथाई सभी कुछ संकटग्रस्त है।

गत आधुनिक युग में रहन-सहन और वातावरण में आए बदलावों के कारण आज गौरैया पर कई खतरे मंडरा रहे हैं। हमारे घरों में अब आँगन होते ही नहीं, फिर बेचारी गौरैया घोंसला बनाए कहाँ? कई अन्य मानवीय गतिविधियाँ भी गौरैया के अस्तित्व को चुनौती दे रही हैं, जैसे मोबाइल फोन के टावर से निकलने वाली रेडियो तरंगें। इनसे घोंसले की तलाश में निकली गौरैया की संतान-समझने की क्षमता कम हो जाती है और वह रास्ता भटक जाती है। सीसा रहित पेट्रोल के सेवन से निर्माता माइक्रो नामक एक यौगिक बनता है, जो गौरैया जैसे छोटे पक्षियों के लिए काफी जहरीला साबित होता है।

प्रकृति में सभी जीवों का अपना अपना महत्व है। इसी शृंखला में गौरैया नाम के इस जीव का संरक्षण आवश्यक हो गया है। गौरैया के अस्तित्व के लिए हम सभी सजग होंगे, ताकि यह प्यारा-सा, नन्हा सा जीव फिर से हमारे घर आँगन में चहक सके।

— नवनीत कुमार गुप्ता

शब्द : अर्थ

क्षमता	सामर्थ्य, शक्ति (capacity)	संरक्षण	बचाकर रखना (protection)
गतिविधियाँ	कार्यकलाप (activities)	चुनौती	ललकार (challenge)
दुर्लभ	मिलने में कठिन (rear to find)	दशक	दस वर्ष (decade)

करें अभ्यास

पाठ से

1. उचित विकल्प चुनिए :

(क) सीसा आम है –

खुलकल ◯ फैर ◯

संकटकल ◯ समान प्रान्त ◯

(ख) सीसा हमारे घर आँगन में बतासा में देखी जा सकती थी–

दो वर्ष पहले ◯ एक दो शताब्द पहले ◯

पचास वर्ष पहले ◯ दो दो वर्ष पहले ◯

(ग) सीसा को पूर्णत प्रजाति में रखा गया है–

नीरसीट में ◯ डिहेन में ◯

कम में ◯ संगेन में ◯

(घ) सीसा को हानि पहुँचाती है–

धूर्त की किरनें ◯ गोचारण ताम्र की तारें ◯

सिसें ◯ बिजली की तारें ◯

2. लघु उत्तरात्मक प्रश्न :

(क) सीसा को किन-किन अन्य नामों से जाना जाता है?

(ख) सामान्य सीसा का वजन और लंबाई कितनी होती है?

(ग) सीसा आजकल किन-किन संकटों से मुक्त रही है?

(घ) गोचारण तारों का सीसा पर क्या प्रभाव पड़ता है?

भाषा-बोधन

1. विलोम शब्द लिखिए :

अनुकूल _____

आवश्यक _____

दुर्लभ _____

सुविधा _____

रोकना _____

2. वचन परिवर्तित करके वाक्य पुनः लिखिए :

(क) चिड़िया खेल पुल रही थी। _____

(ख) किसान परेशान था। _____

(ग) कबूतर दौड़ी पी रहा था। _____

(घ) सभी भाग रोए रही थी। _____

3. मुहावरे वाले शब्द पुनः लिखिए :

गुमराह _____

शाकाहारी _____

किनारा _____

अनुकूल _____

गतिविधि _____

4. उत्तर बताइए :

(क) प्रेरणा – एक विशेष क्षेत्र

कार्यक्षेत्र – निर्णय

(ख) प्रजाति – एक व्यक्ति

व्यक्ति – दूसरी की जाति

(ङ) 'पक्षी भाषी की सोच है।'

इस विषय पर एक नारे का आयोजन कीजिए।

(ख) पक्षियों की सुरक्षा व सहायता के लिए आप क्या कर सकते हैं? अपने विचार लिखिए।

वीरवर मंगल पांडे

कविता

10

(खेवाल पढ़ने के लिए)

एक देशभक्त की शौर्यगाथा पर आधारित

प्रतिहिंसा के पथ को तू हो हुआ प्रथम पदारूढ़।
स्वतंत्रता-वेदी पर तेरा स्वीकृत था बलिदान।।
धर्म-दीप पर पतित हुआ, तू बनकर क्षुद्र पतंग
चढ़ा मातृभूमि पर मानो अग्निम पुष्प समान।

तू था वह चिनगारी जिससे भड़क उठी थी आग।
तू था वह वैराग्य पिता जिससे सता अनुराग।
परगज्जर जब अथा तू था प्रथम तरंग।
तू की लपट बना तू पहले फिर झुलसा था आग।।

जंद्रित-पतित पराक्रम् हुई, तू आदिम उत्कापात।
चढ़ा क्रमोत्र होकर तू पीछे था झंझावात।
मूसलधार झड़ी की होकर बरसा पहली बूँद।
चंद्र सूर्य था पीछे, आगे तू था अरुण उदात।।

समयातीत कार्य था यद्यपि पर तेरा वह त्याग।
और कहेगा किसी समयवेत्ता हुआ तब आत्मविराग?
समधर्म-हित उन्नत हुआ तू होगा यह आक्षेप।
यह दूषण है नहीं, किंतु है भूषण ही कदाचार।।

चारवाक ज्वार जब आया तू था प्रथम तरंग।
पर तेरा अमरणीय रहेगा चारु शृंग हिमवान।।
और बना यदि नहीं रहेगा यह चिर 'स्मृति-स्तंभ'।
पर 'पुंज यह पात करेगा तब तक सभ्य-समाज।।

'सनेहीलाल' 'सफर'

मूल्यांकन 1

पूर्ण अंक 100

संकलित मूल्यांकन (समेटिव)

1. *उचित लघु उत्तरीय महत्त्व :* 1 × 8 = 8
   अर्थ लिखिए :
   संरक्षण, राजक, पुरुषोत्तम, आत्मज, गुलाम, प्रणम्य, उद्धित, स्वायत्तशासन:

2. *लघु उत्तरीय प्रश्न :* 2 × 9 = 18
   (क) नीरीष को किन-किन प्रश्न पत्रों से जान जाता है?
   (ख) गुलामों ने भागने की किस बात के लिए साहसपन किया?
   (ग) स्वयम् ने एक शब्द से अपने बचपने का निरूपण किया?
   (घ) प्रेक्षितों ने आवाजों की सहायता के लिए क्या किया?
   (ङ) कार्यालय ने अपने ऐश में धन के विलास को क्या नीति बनाई?
   (च) रहने वाशिम पाकर उत्कृष्ट ने क्या प्रतिक्रिया की?
   (छ) माँ के चेहरे पर कब उत्साह की रेखा तनने लगती थी?
   (ज) माँ अपना कमरा बच्चों का लोक पुस्तकालय किस प्रयोजन से ले लेती थी?
   (झ) बच्चों का मौन-व्रत धारण, बचपन ही रह गया?

3. *दीर्घ उत्तरीय महत्त्व :* 5
   सप्रसंग आशय स्पष्ट कीजिए...
   (क) "ऐसी भाषी इस भारी माता की तरह है। ऐसी ही महामहीन, ऐसी ही विशाल, ऐसी ही भारत, तुम उनकी सेविका बनकर जीवन सफल कर लोगे अपना।"
   (ख) "अगर जनम को ऐसी चाहें जान में सपनों सोचनाये।"
   (ग) आज किसका टेर शोर पर, किस भोलापन के दिनों में पैक न जाने कितनी सुंदर साहियों से चुनी हुई पर फिर भी आँख के उस 'सपने बाजार' की चार बार-बार जबकर जीवों को पिनी जाती है।

4. *लघु उत्तरीय महत्त्व (भाषा कौशल) :* 5
   उचित स्थानों पर विरामचिह्नांकन निर्देश लगाइए...
   (क) क्या करूँ तब धरूँ मैं।
   (ख) सावधान मुख मंडित बोले।
   (ग) हाय केवल यों ये सेवाने।
   (घ) सुनिए क्या पंखा तेज कर दीजिए।

5. *अनेक भाषाएं :* 4
   (क) शोध – _____
   पारंग – _____
   (ख) प्रकति – _____
   परकति – _____

6. लाघव सुमुख कीजिए : 5×2=10

(क) हम जाती हो घर जाएगा।

(ख) दौ दो बहन न चार भाई हैं।

7. उचित विकल्प चुनिए : 15×2=30

(क) कवि भयभीत है कि उसके प्राण का-

प्रभा हो — प्रलय हो

सत्ता हो — विस्तार हो

(ख) माँ का जीवन तुम्हारा था-

सुख-दुखियों में — दीनी-सुखी में

कई लोगों में — औरों में

(ग) बच्चे माँ से कहते रहते थे-

शिकायतें — फरमाइशें

झगड़ा — हठ

(घ) उस्तादजी ने प्रकाश से सलाह माँगी-

खेती-बाड़ी की — बेटे के विवाह के बारे में

गंधाधार के बारे में — मंदिर के विषय में

(ङ) मेरा ईश्वर कहाँ था-

पहाड़ियों में — देवताओं में

घाँसों में — जेठानी में

(च) बोरा के पति के लिए पर है-

गन्ना — जाम

मेरे पुकार — टोपी

(ग) कबीरदास ने बचपन से ही प्रभाव माना था-

कबीर को — स्वामानंद को

तेज बाले को — शेख को

(छ) शहर की चिमनियों से निकलते धूएँ को उपमा कवि ने की है-

बादलों से — भूतों से

बोझों से — मुसाफ़िरों से

(ज) गीत लाए है –

सुखदान — खैर

संकटहरण — समाप्त प्राण

रचनात्मक मूल्यांकन (फॉरमेटिव) 5×4=20

1. पक्षियों की रक्षा व सहायता के लिए आप क्या कर सकते हैं? लिखिए।
2. 'पर्यावरण संरक्षण' इस विषय पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
3. क्या अच्छा व्यवहार, बुरे आचरण वाले व्यक्ति का हृदय परिवर्तन कर सकता है? अपने विचार लिखिए।
4. अपने किसी शिक्षक का संस्मरण लिखिए।

केसर वाले देश में

यात्रा-वृत्तांत

11

पाठ-परिचय

कश्मीर भारत का गौरव तो है ही, साथ ही इसकी खाँसियाँ हमें एक विलक्षण दृश्य से होने का भी अनुभव कराती हैं। यह में लेखक ने इसका सजीव चित्रण किया है।

खाँसी वस्तुतः एक रोग है, जिसे स्थान से शोर है जहाँ हर प्रकार का शुद्ध व सौंधी पर्यावरण अवलम्ब में होता है।

मैं अपने बचपन से सुनता चला आ रहा था कि कश्मीर भारत का स्वर्ग है। बस सामान्य भी कि न यह स्वर्ग देखा था और न कश्मीर। पता कैसे चले कि स्वर्ग कैसा है? यह कश्मीर कैसा है? इसलिए एक दिन कुछ मित्रों के साथ दिल्ली से कश्मीर यात्रा का कार्यक्रम बन गया। कार्यक्रम बनाया ही नहीं, पास भी पड़ा।

पहले रेलगाड़ी पहाणकोट तक ही जाती थी। लेकिन अब जम्मू तक जाती है। जम्मू का नाम तो अपने सुना होगा। उसी नगरी के किनारे यह ऐसा शहर है, जो अपने गौरव के लिए मशहूर है। जम्मू के रघुनाथजी रेलवाल में मशहूर हैं। रघुनाथजी मंदिर का गुंबद सोने से जड़ा है और दूर से ही चमकता है। लेकिन वहाँ एक ही मंदिर नहीं है अनेक मंदिर और अनेक महादेव हैं। एक महादेव पारदशी हैं—स्फटिक के, शायद भारत भर में ऐसे दूसरे नहीं हैं।

माता वैष्णो देवी मंदिर

जम्मू गए और वैष्णो देवी न गए तो लोग कहते हैं कि जीवन अकारथ। मेरे साथियों में एक की हिम्मत वैष्णो देवी के नाम से खुले लगी। कारण यह नहीं था कि वे देवी के दर्शन नहीं करना चाहते थे। अकारण ही देवी तक पहुँचने में जिसमें परिस्थितियाँ पहुँचते पहाड़ों हैं, उनमें में तो अच्छे-अच्छों की हिम्मत टूट जाती है। वे बेचारे थोड़े मुतमुतुए थे। उनकी खेत का खसल करके हम लोगों ने वैष्णो देवी की जगह श्रीनगर और पहलगाँव जाना तय किया।

शिकारा चला

जम्मू गए थोड़ी ही दूर चली। जम्मू के बाद पहाड़ों का सिलसिला शुरू हुआ। पहले छोटे, फिर बड़े और फिर बहुत बड़े। बसों के पास एक थोड़ी पर बस रुकी। लगत पूर्वा भाल बीसल हरियाली के बीच बड़े खूबसूरत लग रहे थे। नाम पूछा तो पता चला कहर स्वर्ग की तरफ बढ़ रहे हैं उपरी जाने कहाँ से हवाई सड़क के किनारे-किनारे एक

खूबसूरत-सी नदी आ गई। नाव का पल लगवा तो पता चला लिद्दर नदी है उसी नदी के किनारे-किनारे पहलगाँव आ गए और सब बाजार, पहलगाँव अलग पर लगा कि स्वर्ग में आ गए। छोटा-सा बाजार, सड़क के दोनों ओर की दुकानें, सड़क के नीचे लिद्दर नदी का लगातार हाहाकार, नीले हुसनी खूबसूरत नदी अपनी चार में बनी देखी नहीं थी। पुलिस की कुछ सख्त नजरें को केवल हाल में ही लोग था और उन नदियों की गोदी देखकर लिद्दर की खूबसूरती बसमुन पेशी लगी जैसी स्वर्ग की नदियों की होती होगी। तेरी पेशी

शेषनाग झील

चंदनवाड़ी है, जहाँ तक जीप जाती है। फिर पिस्सू टॉप है, जिसको चढ़ाई अमरनाथ बाबा की सबसे कठिन चढ़ाई मानी जाती है। वहाँ से आगे शेषनाग झील है, जिसका पानी इतना शीतल था कि हाथ में और स्वर्ग की नदियों से टकराव लेता है। शेषनाग झील के आगे अमरनाथ गुफा है, जहाँ स्वयंभाव की लोग बाबा अमरनाथ के दर्शन करने के लिए देश-विदेश से आते हैं। ये बाबा अमरनाथ बर्फ के बने हुए हैं, जो चौदह घटते-बढ़ते के हिसाब से घटते बढ़ते रहते हैं। अमरनाथ के आगे लद्दाख की सीमाएँ हैं।

तय किया था कि अब श्रीनगर चला जाए। मन में बैठे कि श्रीनगर झीलों। पहुँचे भी नहीं थे कि मन लगातार लगा- श्रीनगर चलने को। एक मजदूर से पूछा, उस झील कहाँ हैं? उन्होंने हाथ का इशारा किया और हाथ उलझ में डूबे हुए डल झील के किनारे आ गए। अलाल में श्रीनगर झीलों और झेलम का मिला-जुला शहर है अगर आप चाहें तो किसी शिकारे में बैठकर श्रीनगर का काफी बड़ा हिस्सा घूमी-घामी पूरा सकते हैं। डल का मजा किसी शिकारे में बड़े नहीं आता। सो सवाल, एक

पहलगाम

कि साँप भी पीछे रह जाए। नमकाल ऐसी कि बार-बार बूढ़े को मन लगाया। लेकिन ठंडी ऐसी कि पानी छूना न जाए। सामने के पहाड़ में एक बर्फ का टुकड़ा पत्थरों में जमकर शर्द के फाड़े जैसा लग रहा था।

पहलगाँव में एक घोड़े वाले से पूछा, ''कोलगाँव चलोगे''। बोला, ''चलोगे''। वैसे पूछा, ''बहुत किराया पड़ेगा?''

'बोल-बोल पहाड़ पड़ेगा साहब' और चढ़ने का नाम सुनकर मेरे ऊपरी मुलमुल साथी को हवा फिर खिसक गई और जाना तो हमें भी नहीं था, लेकिन इसी पुलाव में पका बना कि पहलगाँव से आठ मील पर

शिवलिंग

तिकारा किया गया और नया चमुआँ की छप-छप के साथ ही आने लगा। आप पाव में केरो गोरए और नावों में लगी दुकानें आपके पास से गुजरती जाएँगी। फूल, केसर, कश्मीरी शाल के काम की चीजें इन नावों पर मिलती हैं। एक शायी केसर पर घुण्ध भी, सबको केसर खरीदाकर ये लग गए।

फिर हम लोग "बार फिलर" तक गए। यार फिलर यान बड़े-बड़े चिनार के पेड़ों वाला एक छोटा-सा द्वीप है, जो आवासन द्वारा घेर के पानी से घिरा बड़ा खूबसूरत लगता है।

डल के ही किनारे अँधी पहाड़ी पर संकोचनाथ का मंदिर भी है। यहाँ हम लोग टैक्सी से गए और फिर वहाँ टैक्सी हमें निकाल कर ले गई। निकाल कर डल के किनारे ही पहाड़ी जैसी ऊँचाई पर लोहे पर सीढ़ी कर चढ़ाव हुआ एक खूबसूरत बाग है। बाग के सबसे ऊपर हिस्से में खड़े होकर डल की तरफ देखिए तो देखा लगता है, मानो एक खूबसूरत सी एक खूबसूरत आइने में अपना चेहरा प्रतिबिंब रही हो। डल के परिवाम में निशात के सामने नसीम बाग है, जिसको सम्राट अकबर ने लगवाया था। इसे ठंडी हवाओं का बाग जाकर सही रूप से समझा जा सकता है।

शालीमार बाग

चश्मेशाही

लेकिन नहीं बड़े रास्ते से काम नहीं चलेगा। हमें तो अभी 'चश्मेशाही' चलना है, जिसका पानी एक का कान करता है। चश्मेशाही यानी बादशाही स्रोत, शहजादों को देन है। ऐसा ही एक स्रोत श्रीनगर से 60 किलोमीटर दूर अचबल में है अनंतनाग में भी ऐसे कुछ स्रोते हैं।

आइए, इन स्रोतों के चक्कर में आपको उस क्षेत्र में ले चलते जो है तो डल से छोटी लेकिन वहाँ जल-क्रीड़ाएँ खूब होती हैं। भोग-भोग में सर्दियों, उबाहियों, तैराकी आदि करते हुए सैलानियों को देखकर मन ही खूबसूरत लगता है।

लेकिन आइए, आपको तो चार जहीरीन के लगवाए बाग में लिये शालीमार बाग चलते हैं। चिनार के पत्तों की गोद में जहीरीन का यह प्यारा-सा बाग कवीय चार की सात पुरुत्र है। इसके चबूतरे, संगमरमरी मेहराबों वाले छोटे-छोटे मेंगराब, बरामदे, पत्थरे और झूले, एक की दीवारों में इस पुरिया से नयाबार खूबसूरत लगते हैं। अब नहीं गेरा साल को चाँदी और प्रकाश के जहाँ प्रतिमान को उतारा जाता है। यह दृश्य तो देखने काबिल होता है जब पेड़ों की टहनियों और पुत्तों की बचाविर्यों के बीच से पुँपिकाओं की आवाजें आसे सुनाई देती हैं। पूरा इतिहास जैसे शालीमार में उतरकर खड़ा हो जाता है।

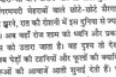
निकारा

झेलम की हाउसबोटों की दुनिया भी अजीब है। हम लोग होटल में उतरे थे, लेकिन एक हाउसबोट को अंदर से देखने का बड़ा मन था। अपने तिकाऊ को एक हाउसबोट के पास लगवाया। आवाज दी कि हाउसबोट का मालिक आए, तो उससे थाव-ताव करें। कोई नहीं आया सायद आवाज नहीं सुनी। हमने सोचा अंदर होगा, तो हाउसबोट में चढ़ गए। अंदर झाँका तो देखकर उबोला दंग। बाहर से जो केवल एक थाव लग रहा था वह अंदर पूरा एकसी पहाल था। फर्श पर कालीन बिछा हुआ, कोचे और तकिया लगे हुए बिलकुल नवाबी से लगे। पूरा ठैराव पहाल। हम अकस्मात्‌ ही हम लोग हाउसबोट में घुस गेव मालिक भाग हुआ आया और स्वागत किया हम पर। हमने चाबी माँगी और थाव्या हो गया। तब उसने बताया कि हम लोग लोग आकर हमारा हाउसबोट गेव बाज जाते हैं। उसकी बातचीत से पता चला कि ये हाउसबोट शहर में अलोलगन होटलों से ज्यादा महँगे और ज्यादा आरामपायक हैं।

गुलमर्ग

दूसरे दिन गुलमर्ग। गुलमर्ग यानी समुद्र सतह से मीटर ऊँचा खूबसूरत भारगाह है, जहाँ हर मौसम में मोटर से पहुँचा जा सकता है। गोल्फ लिंक और बर्फ पर स्कीइंग के लिए यह बहुत मशहूर है। स्कीइंग के लिए तो पर्यटक सारी बर्फ के दिनों में जाना होता है, लेकिन स्कीइंग करने वालों को उनका चढ़ने के लिए जो 'रोप वे (रज्जुमार्ग)' बनाया गया है उस पर चढ़कर हम भी मजा आया। हम चढ़ तो गए, लेकिन लौटते समय कुर्सी पर आसमान में हो रोप वे कि पानी बरसने लगा। न कूद सकते हैं न धान सकते हैं, क्योंकि रस्सी रस्सों से बँधी कुर्सियाँ अपनी रफ्तार से सरक रही थीं–धीरे-धीरे–धीरे-धीरे। जब हम नीचे उतरे तो पानी थम गया था और हम घरे सर्दी के ठिठुर रहे थे। लौटकर श्रीनगर में रात भर कंबलों में दुबके रहे।

गुलमर्ग के पास ही थोड़ा और ऊँचाई पर खिलनमर्ग पड़ता है, जिस ओर ऊँचाई पर लोग बर्फ तक जाते हैं। बगल इस उतनी ही सर्दी में घमता गए थे और ऊँचाई पर जाने का हौसला खो बैठे थे। हिमालय की इस खूबसूरत चोटी को और नजदीक से देखने के लिए दुबारा अपने का इतना करीब हम लोग अपने घरों को और लौट पड़े। लेकिन इतना ही कश्मीर देखकर यह मालूम कर लिया कि अगर कश्मीर नहीं देखा तो हिंदुस्तान में कुछ नहीं देखा। शेष के बाग, बगल की घाटियाँ, केसर के खेत, नाजुक के गोल, बर्फ को चादरें ताने हिमालय के विशाल पर्वतखंड और झीलों के आइनों में घूँट झलकती चोटियाँ, चश्मे और झरने और सबसे बढ़कर कश्मीर के भोले-भाले मेहमानवाज लोग–यह सब स्वर्ग नहीं है तो और क्या है?

–कर्मेन्द्रनाथ पंडित

शब्द : अर्थ

गुंबद	इमारत का अर्ध गोलाकार शिखर (dome)	मशहूर	विख्यात, प्रसिद्ध (famous)
स्फटिक	एक तरह का बहुत बहुमूल्य तथा पारदर्शी पत्थर (crystal, quartz)	अकाय	बेकार, व्यर्थ, अनुपयोगी (useless)
बहुमूल्य	बहुत अधिक कीमती (very fat)	मेहराब	दरवाजे के ऊपर बना अर्धवृत्ताकार भाग (arch)
सोता	झरना, नदी की छोटी धारा (stream)	मेहमानवाज़	अतिथि का स्वागत करने वाला (host)
रोप वे	रस्सी का रास्ता (way of rope)		

पाठ से

1. उचित विकल्प चुनिए :

(क) स्वप्नदर्शी के मंदिर का गुंबद है–
- चौराहे का
- झील का
- मोने का
- चोटी का

(ख) नवीन भाव लगवाया था–
- शहरवालों ने
- जहीरीन ने
- औरंगजेब ने
- अकबर ने

(ग) गुलमर्ग है–
- एक होटल
- एक नदी
- एक चारागाह
- एक शहर

(घ) चार-सितार नाम है एक–
- शहर का
- नदी का
- टापू का
- पर्वत का

2. लघु उत्तरीय प्रश्न :

(क) वैष्णो देवी जाने के मार्ग पर लोहार के एक साथी की शिकायत क्यों जवाब देने लगी?

_____

(ख) सिद्धूर पर्वत की सुंदरता का वर्णन लेखक ने किन शब्दों में किया है?

(ग) लेखक झील को क्या निहारता है?

(घ) घर के आधार पर शालीमार बाग का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :

सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

'अगर कश्मीर नहीं देखा तो हिंदुस्तान में कुछ नहीं देखा। ठेठ के बाग, बादाम की बाड़ियाँ, केसर के खेत, मालूम के गोल बर्फ की चादर ताने हिमालय के सिखर पर्वत खेत और झीलों के आइनों में पूरे झीलती घाटियाँ, चश्मे और झरने और सबसे बढ़कर कश्मीर के भोले-भाले नेहरूनवाज लोग–यह सब स्वर्ग है तो और क्या है?

भाषा-संरचना

1. सुमेल कीजिए :

क	ख
सुख	स्वर्ग
पानी	आकर्षक
जन्नत	उद्यान
मालूम	नहीं
बाग	प्रारंभ
सुरमुराह	अनुभव

2. वाक्यांशों के लिए एक-एक शब्द लिखिए :

(क) जहाँ दुःख ही दुःख हो – _____

(ख) जिसका कोई जवाब न हो – _____

(ग) जो शेष न रे – _____

(घ) जो करने योग्य न हो – _____

(ङ) जो विश्वास का पात्र न्र – _____

रचनात्मक कौशल

1. भारत के किसी पहाड़ी स्थल की यात्रा कीजिए तत्पश्चात् उसका वर्णन कीजिए।

_____

_____

_____

_____

_____

_____

_____

_____

_____

_____

2. वर्तमान समय में भारतीयसंस्कृति को किन-किन समस्याओं से जूझना पड़ रहा है, पत्र लिखिए।

नृत्य ही मेरा संसार है

सोनल मानसिंह (आत्मकथ्य)

12

पाठ-परिचय

सोनल मानसिंह का नाम शास्त्रीय नृत्य में सर्वमान्य है। नृत्य उनके जीवन से नहीं, उनके रोम-रोम में बसा है। प्रस्तुत है उनकी ये नृत्य-यात्रा—

अभिमुख मार्ग का ऐसा प्रवाह जो मनोहर को नहीं बहाता है तो जाने को उत्पन्न होता है, उसका अनुभव होना ही अभिमुख होना है।

नृत्य करते हुए मुझे पचास वर्ष हो गए हैं। एक लंबी यात्रा के बाद अब नहीं आकर एक पड़ाव की तरह लगता है। नृत्य में बाहरापन का अपना महत्त्व होता है। कल-कल करती गंगा की लहरों के साथ नृत्य हो या फिर नीलम रात में उजले ताज के सामने-नृत्य को अपनी खास दशा बनती है, आप एक को दूसरे से नहीं जोड़ सकते। उसके अनुरूप नृत्य गति, लय, भाव-भंगिमा पाता है। मैं अंडालुसी और मालवाइयन के नहीं सपोकार से जुड़ी हूँ, मैं मंदिर में भी तथा चुकी हूँ, घाटों में भी और दुनिया भर के चमकते-दमकते ऑडिटोरियम में भी। मुझे यह बात अभिभूत करती है कि लोगों ने मुझे अथाह प्यार दिया, मेरी कला को सराहा और मेरी नृत्य कला को जाना समझा।

मेरे अब तक 187 विश्वों पर नृत्य संयोजन तैयार किए गए हैं। आप उनमें से किसी एक या दो का चयन नहीं कर सकते हैं, परिवेश को ध्यान में रखकर प्रस्तुति के लिए किसी एक थीम का चयन कर लिया जाता है। मेरी कोरियोग्राफी में यही दृश्य जाती है, मेरा उद्देश्य रहता है कि इसके साथ सामंजस्य सर्वोत्कर्ष की जोड़ सकूँ। मैं यह जानती हूँ कि मेरी आस्था मात्र नृत्य ही है। मैं नृत्य को सौंदर्य और आदर्श तक ही नहीं देखती, इसके माध्यम से समाज के बदलावों को अपेक्षा भी रखती हूँ।

मैं जानती हूँ कि कुछ नया किए बगैर मैं नहीं तक नहीं पहुँचती। मुझे अच्छा लगता है कि जिस विधा को मैंने अपने जीवन से जोड़ा, उसे बहुत गहरे आत्मसात किया। भारत में शास्त्रीय नृत्य की विधा को आत्मसात करने की लगन रही है। पर लोग कहें- कोई शास्त्रीय गुणों के प्रति उतना रुझान नहीं दिखा रहा। कला के संरक्षण के लिए कोई लोग प्रयास होता हुआ नहीं दिखता। आप देखिए, शास्त्रीय नृत्य के आयोजन में कितने लोग आ पाते हैं। अगर 'सालसा' या 'बीट' जैसी दिशाएँ नृत्य हों, तो लोग यह जाने बिना कि कौन कलाकार परफॉर्म कर रहा है, वहाँ उमड़ पड़ते हैं।

कुछ ऐसे आयोजकों और स्वयं हम कलाकारों का भी है। संकल्पहीनता बनी हुई है। एक तो लगेगा ये बस चौपट कर दिया है। अब हर चीज में गौरव चाहिए। फिर चैर्य की भी कमी है। शास्त्रीय को आत्मसात करने की दिशा और फिर उसका असीम मुख प्राप्त करने के लिए थोड़ा धैर्य चाहिए।

आज भी कुछ मूल्यांकनाएँ हैं, जो पूरी लगन के साथ हैं। लेकिन कुछ भटकाव दिखता है। आज की मूल्यांकनाएँ सफलता थोड़ा जल्दी पाना चाहती हैं। इसके लिए उन स्थितियों को भी जिम्मेदार माना जा सकता है, जो अपने कार्यक्रमों को पसंदगी के लिए चार-पाँच हजारों में ही किसी को पसंद बना देते हैं।

मैंने इस बात को कभी ज्यादा अहमियत नहीं दी कि मेरा मूल्य देखने किससे लोग आए हैं। यह सच है कि दर्शकों की अच्छी उपस्थिति मन को खुश करती है, लेकिन एक बात तुरंत आरंभ होने के बाद यह नहीं सोचा जाता कि हम किसके लोगों के सामने मूल्य कर रहे हैं। अगर कहीं एक दर्शक भी हो, तो मैं चाहता चाहूँगी। मुझसे अकसर पूछा जाता है कि मेरा बस बड़ा दर्शक कौन होता है तो मैं यही कहती हूँ कि मेरा सबसे बड़ा दर्शक तो मेरे अंदर है।

फिल्मों को अपनी सीमाएँ हैं। पर उनमें अच्छे मूल्य भी मिलते हैं। फिल्मों से कुछ अच्छे मूल्यों का संयोजन कर मैंने एक कॉरियोग्राफी भी तैयार की है। पर फिल्म के मूल्य पर आप शास्त्रीय मूल्य को केवल कुछ क्षणिक रेखा सकते हैं। शास्त्रीयता का पूरे वैभव में तो मंचों पर ही रेखा जा सकता है।

–प्रस्तुति: वेद विलास उनियाल

शब्द : अर्थ

नीरव	शांति (soundlessness)	भाव-भंगिमा	हाव-भाव का संचालन (expression)
चयन	चुनाव (selection)	परिवेश	माहौल-वातावरण (atmosphere)
थीम	विषय (theme)	कोरियोग्राफी	मूल्य से पहले मूल्य के भाग हव करना (choreography)
आत्मसात	स्वयं में विलय (assimilation)		
गौरव	चमक-दमक, वैभव का दिखाव (glamour)		

करें अभ्यास

पाठ से

1. उचित विकल्प चुनिए :

(क) सोनल जी पुरुषोत्तम है–
- शालीन पुरुष की
- बैले की
- महिला की
- ट्रेलर की

(ख) सोनल जी अभिभूत हैं–
- अपनी सफलता से
- लोगों के प्यार से
- अपने घर से
- अपनी आय की

(ग) पुरुष से सोनल जी को आशा है–
- इतर परिवर्तन की
- आर्थिक स्थिति में सुधार की
- सामाजिक परिवर्तन की
- उच्च आय से

(घ) पुरुष रेखाने वाले सबसे बड़ा दार्शनिक कौन है–
- जो पहली पंक्ति में बैठे
- स्वयं चार्लक
- जो महीन टिकिट खरीदे
- जो खूब ताली बजाए

2. लघु उत्तरीय प्रश्न :

(क) पुरुष में बालकपन का क्या महत्व है?

(ख) सोनल जी किन-किन पुरुषों से गहराई से जुड़ी हैं?

(ग) आजकल शालीन पुरुष के प्रति लोगों का रुझान कैसा है?

(घ) शालीनता का पूरा वैभव कहाँ देखा जा सकता है?

भाषा-बोधन

1. *दिए गए वाक्यों में उचित विराम-चिह्न लगाइए :*

(क) क्या आपने राजकीय पुस्तक देखा है

(ख) क्या क्या पाठ-परिचर्या होती है

(ग) मैं चीनु देशका व कृति पुस्त देखने गए थे

(घ) चीनु पुस्त देखकर कोनी में तो इसे अवसर मीलूँदे

2. दो शब्दों, वाक्यांशों या वाक्यों को जोड़ने वाले शब्दों को समुच्चयबोधक कहते हैं, जैसे– और, साथ ही, तथा, अथवा, अथवा, अर्थात्, यानि, इसलिए, लेकिन, परंतु आदि

दिए स्थान में उचित समुच्चयबोधक भरिए :

(क) पुस्त एक ज्ञानधन है _____ यह हमारे स्वास्थ्य को भी सुधारता है।

(ख) खूब पढ़ो _____ कक्षा में प्रथम सको।

(ग) काल भी आलोचिका का मापन है _____ लोग इस दिशा में कम रुचि लेते हैं।

(घ) तुम तो ऐसे चकरा उठे _____ तुम्हारी योगी हो।

रचनात्मक कौशल

संकलित खेल के दो-दो विख्यात कलाकारों के नाम लिखिए:–

(क) नृत्य – _____ _____

(ख) गीत – _____ _____

(ग) संगीत – _____ _____

(घ) अभिनय – _____ _____

हम सबके और सब हमारे

लेख

13

(केवल पढ़ने के लिए)

पाठ-परिचय

प्राय: हम स्वयं पर अभिमान करते हैं, किंतु कदाचित ही हम पर अनेक लोगों के उपकार हैं, इसलिए हमें निरभिमान से इस सत्यता को स्वीकार कर लेना चाहिए कि हमें हमेशा दूसरों की आवश्यकता पड़ती है। आइए सभी प्राणी हमारे सहयोगी व साथी हैं–

हमारा जीवन पूर्णत: दूसरों पर निर्भर करता है। हमारे कपड़े रुई के हैं और कपास खेतों से आती है और कपास उन किसानों से प्राप्त होती है जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी खेतों में काम करते हैं। इसके बाद इसी मकान आते हैं। यह कमरा आज थोड़ा गरम है, अत्यन्त बहुत आरामदायक होता है। यह सुविधादायक स्थिति उन श्रमिकों के परिश्रम से बनी है, जिन्होंने इसके लिए अपना पसीना बहाया। अपने एक हमारा जीवन भोजन पर आधारित होता है। अपनी बात सोचें कि अब तक कितनी रोटियाँ मैंने खाई हैं तो उन सब को एक साथ रख लिया जाए तो पहाड़ बन जाए।

अब तक मैंने कितना दूध पिया तो उन दूध का नाला बन जाए। यदि व्यक्ति शाकाहारी नहीं है तो उसके खाए हुए मांस से भी पहाड़ बन जाए। शाकाहारी अनेक प्रकार के फल और सब्जियाँ खाते हैं। ये सब आकाश से नहीं आते, बल्कि अनेक श्रमिकों के कठिन परिश्रम से पैदा होते हैं।

प्रतिष्ठित भी दूसरों के द्वारा ही दी जाती हैं। यदि एक ही व्यक्ति हो तो कैसे कोई विख्यात हो सकता है। प्रतिष्ठित तभी होती है जब बहुतों के मुख से चर्चा हो। यह प्रतिष्ठित भी दूसरों पर ही निर्भर है। खाना, कपड़ा और मकान सभी कुछ तो दूसरों पर निर्भर हैं। हम सोच भी नहीं सकते हैं कि हमने इनकी कीमत चुकाई है। मैंने इन्हें दान देकर खरीदा है। पैसों के बिना हम भोजन या अन्य वस्तु प्राप्त नहीं कर सकते। लेकिन वह धन भी तो आपके मुख से नहीं आता। वह भी बहुत-से लोगों के हाथों से होकर आता है। इस प्रकार हमारी जीवन की विडम्बनाएं पूर्णरूप से दूसरों पर निर्भर हैं।

ये सभी बातें सही हैं, लेकिन मैं कुछ वस्तुओं को परमेश्वर कहता हूँ जो मेरे रागभाव का प्रतिदान नहीं करतीं। उदाहरण के लिए, यदि मेरी घड़ी फर्श पर गिरकर टूट जाती है तो मुझे एक क्षण क्षति होने की भावना प्रकट कर लेती है। इसका अर्थ नहीं है कि घड़ी मुझ पर कृपा कर रही थी। वरन् मैं ही उसका खयाल रखता हूँ।

इसी प्रकार जानबूझकर हमारे लिए भले ही किसी ने कुछ नहीं किया हो लेकिन उनका काम हमारे लिए उपयोगी है। इसलिए हमें उनकी कृपा का ज्ञान होना चाहिए और उनका खयाल रखना चाहिए। हमें ज्ञात रहना चाहिए कि अन्य व्यक्ति भले ही किसी प्रेरणा भाव से हमारी सहायता नहीं करें, लेकिन हम उनके योगदान और प्रयासों पर अपने जीवन के लिए निर्भर तो करते ही हैं। उस निर्भरता के लिए मन में अनुग्रह और भगवान का भाव आ जाए तो जीवन कृत-कृत्य हो उठता है। अन्यथा अगर कीमत चुकाने और सुविधाएँ पाने का भाव ही मन में हो तो क्षण-प्रतिक्षण जो तनाव झेलने पड़ सकते हैं, उसका कोई हिसाब ही न रहे। दूसरों के प्रयास से मिली सुविधाओं और सेवाओं का लिए आभार मानिए। भले ही आपने उनकी कीमत चुकाई हो।

(संकलित)

हज़रत निजामुद्दीन औलिया

जीवन-परिचय

14

(केवल पढ़ने के लिए)

पाठ-परिचय

भारतभूमि संतों और दरवेशों की भूमि रही है। यहाँ पर अनेक महान आत्माएँ अवतरित हुईं। उन्हीं में से एक हैं हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया। प्रस्तुत है उनकी जीवनगाथा।

हज़रत निज़ामुद्दीन का जन्म आज से लगभग सात सौ वर्ष पूर्व उत्तर प्रदेश के बदाँयूँ नामक नगर में हुआ था। वे पाँच वर्ष के ही थे कि उनके सिर से पिता का साया उठ गया। कुछ दिन बाद उनकी माँ भी चल बसीं। परंतु मरते समय अपने मासूम बेटे को पालनहार को सौंपते हुए बोलीं—"ऐ खुदाबंद करीम, अपना निज़ाम तुझे सौंप रही हूँ। अब तू ही इसका रखवाला है।"

माँ की मृत्यु के उपरांत बालक निज़ामुद्दीन के मन में एक ही बात बैठ गई कि माँ ने मुझे खुदा को सौंप दिया है। अब मैं खुदा का हूँ और उसी का होकर रहूँगा। सारी उम्र उसी की इबादत में गुज़ारूँगा। माँ ने मुझे रास्ता दिखा दिया है। इसके बाद वे बदाँयूँ में नहीं रुके और दिल्ली चले आए।

दिल्ली उन दिनों महारौली को ओर बसी थी। शहर में बड़ी चहल-पहल रहती थी। शहर के शोरगुल से बचने के लिए हज़रत निज़ामुद्दीन मासूम को और नवासमुद्दीन नौमि में बस गए। यह नौमि उस जगह था, जहाँ आज हुमायूँ का मकबरा है। हज़रत को यह जगह बहुत पसंद आई।

इबादत-प्रार्थना, पूजा, उपासना ये सभी इबादत के ही समानार्थी हैं।

हजरत निजामुद्दीन रात-दिन खुदा की इबादत में डूबे रहते थे। उन्हें न खाने की चिंता रहती, न आराम की खुशी। जो भी बन्दा-मुख्ला उनसे मिलने आते वह खुदा की नियामत समझकर खा लेते। उनकी सभी इबादत तथा उनके नियमतो पमहात के कारण उनके नगर सब व्यक्ति होने लगे। वे जो कुछ कह देते, सब सिद्ध हो जाता। वह सब में कोई दुःख, पीड़ा या सब संतोषों के प्रति सम्पूर्ण, न जाति-पाँति का विचार, न जैन-पीर का खेल, ऐसे व्यक्ति का सब पाकर लगे थे इसमें कोई आश्चर्य नहीं। उनके लिए सब ईश्वर एक समान थे। वे सबको खुदा के तथा एक उन्हें प्यार करते थे, और उन्हें भी आदरपूर्वक देखते थे। उनके लिए सब ईश्वर एक समान थे। वे सबको खुदा के समान प्यार करते थे।

'मखदूम-ए-उलमाँ' के नाम से प्रसिद्ध हो गए।

हजरत निजामुद्दीन की प्रसिद्धि दूर-दूर तक फैल गई। लोग उनके पास कोसनी-सी-कोसनी मील लेकर आते। हजरत उन मेहनों को दीन-दुनियाँ में बोलने लगे। उनके खुद के पास कुछ न था - न धन दौलत, न राजपाट; लेकिन उनके दरबार से कोई खाली झोली लिए नहीं लौटता। वे तो बादशाहों के बादशाह थे। कहा भी है -

चाह गदा किसी पिछली, मनुजा बेपरवाह।
जिनको कुछ न चाहिए, वोई शहंशाह।

हजरत निजामुद्दीन ने दिल्ली में सात बादशाहों को बादशाह देखी थी पर वे कभी किसी के दरबार में नहीं गए। हर बादशाह की ख्वाहिश थी कि हजरत को दरबार में हाजिरी दें और वे दिन रात के आगे बैठे रहें; लेकिन किसी को भी यह फजीलत पूरी नहीं हुई। दीन-दुनियाँ की दुआएँ पाने के लिए बड़े-बड़े बादशाह तरसते थे। उन्हें कभी-कभी बुलाने के लिए दूत भेजते थे।

एक बार हजरत ने पक्की की बिल्लत हुए बादशाह के लिए एक बकरी खुरबाई। उनसे दिन्नें तुगलकाबाद का किला बन रहा था। बकरी की खुदा जबरत थी। जब उनकाबीन बादशाह गयासुद्दीन का किला बन रहा था। बकरी की खुदा जबरत थी। जब उनकाबीन बादशाह गयासुद्दीन तुगलक को मालूम हुआ कि खुदा में बकरी खाकर खाने चले जाते हैं तो वह बहुत नाराज हुआ। उसने फरमान जारी कर दिया कि वोई बकरा बाबरी पर काम करने नहीं जाएगा। बकरी को पानी निकल आया था, लेकिन अभी खुदा काम करी था। बकरा दिन में निकले का काम करते, रात में पिंजरा की रोशनी में बाबरी पर, क्योंकि वे तो मखदूम-ए-उलमाँ के मुरीद थे। गयासुद्दीन ने खुद जो बोलना उसने इबादतगारों को हुक्म दिया कि बाबरी के काम पर लिए लेन न दिया जाए। हजरत को मालूम हुआ तो मुख्तसर बोले-'बिलाशे में लेन की जगह बाबरी का पानी हलाल।' बकरी ने देखा तो किसा। कहते हैं कि लेन की जगह पानी निकल जाने उठे और बाबरी का काम पहले की तरह होता रहा। यह सुनकर गयासुद्दीन जल-भुन गया।

गयासुद्दीन का फकीर तुगलकी फरमानों की बेइज्जती करे, यह बात गयासुद्दीन तुगलक को सहन नहीं हुई। उसने हजरत को बुलवाया तो वह दिल्ली छोड़कर किसी अन्य स्थान पर चले जाने की सलाह देने लगे। वे तो गयासुद्दीन को स्वयं सिद्ध-मंगल की ओर जाना चाहा। वहाँ भी हजरत की शान उसकी आँखों में खटकती रही। वहाँ से हुक्म भेजा कि यो हुक्म की तामील हो। हजरत ने सुना और मुख्तसर बोले-"हरेक दिलगी पूरा अलल, यानि-अभी दिल्ली दूर है।" तुगलक बादशाह ने सुना तो रौंद पीस लिए। जब दिल्ली से-चार दिन गयासुद्दीन का दूत रह गई तो उसने वही हुक्म भेजा। हजरत ने मुख्तसर फिर वही जवाब दिया। लेकिन वह भी दिल्ली में भी कब अब बना होगा; उन्हें डर था कि हजरत हजरत के साथ पूर्णमंजार करेंगे। लेकिन वे यह भी जानते थे कि हजरत तो मखदूम-ए-उलमाँ हैं। अतः कोई उनका काम रुक सकेगा नहीं कर सकता और ऐसा हो जाए तो वहाँ से कुछ ही दिनों में वे ही हमारी काम हो गया है तब वे समझ गए कि उनके उसको करनी का फल मिल गया।

हजरत निजामुद्दीन सच्चे भारतीय संत थे। उन्हें भारत से, विशेषकर यहाँ के गाँवों के गांव-भाव किसानों से, यहाँ

के परिवारों से और वहाँ के लोक-रीतों से बहुत प्यार था। संगीत को वे आत्मा का रस समझते थे। संगीत के माध्यम से

आत्म-निवेदन पूर्णता पाकर्ता से सीधा संपर्क साधने के लिए उन्होंने सर्वप्रथम कव्वाली की प्रथा शुरू की। गाते-गाते वे स्वयं लीन हो जाते थे। वर्षा में सरसों के पीले फूल और आम की मंजरी उन्हें बहुत पसंद थीं। आज भी वर्षा पंचमी के दिन उनके मजार पर सरसों के फूलों की चादर चढ़ाई जाती है। सावन के झूले भी उन्हें बहुत प्रिय थे। उस समय के प्रसिद्ध कवि और संगीतज्ञ अमीर खुसरो उनके शिष्य थे और सबसे बड़ी बात तो यह है कि हजरत निजामुद्दीन हिंदू-मुस्लिम एकता के और दोनों संस्कृतियों के समन्वय के प्रतीक थे। उनके शिष्य का सम्प्रदाय मिलते ही सब हिंदू, जब मुसलमान, सभी उनके अतिव धार्मिक उनकी कुटिया पर एकत्रित हो गए। उनका ध्यान अल्लाह की ओर हो गया था। उन्हें दुनिया दिखने वाला, उनके दुःख-दर्द को समझने वाला और उनके अधि पीड़ने वाला उनको छोड़कर चला गया था। चारों ओर जैसे अंधकार छा गया था इसी अवसर पर हजरत के प्यारे शिष्य खुसरो से कहा-

गोरी सोवे सेज पर, मुख पर डारे केस।
चलचल सुखों पर अपने, रैन भई चहुँ देस॥

आज दिल्ली में उनकी दरगाह के पास की एक बड़ी बस्ती हजरत निजामुद्दीन कही जाती है। इसके निकट ही इसी नाम का रेलवे स्टेशन भी हैं, प्रतिदिन सैकड़ों यात्री दूर-दूर से आकर दरगाह के दर्शन करते हैं। कुछ समय यहाँ बिताते हैं, अपनी मनौती हैं और प्रेम का संदेश ले जाते हैं। आज भी उनकी याद में उनकी दरगाह पर हर रात उर्स लगता है। इस दिन विदेशों से भी लोग यहाँ आते हैं। भाई चारे और प्रेम का पैगाम ले जाते हैं।

—संकलित

युगावतार गांधी

कविता

15

(केवल पढ़ने के लिए)

चल पड़े जिधर दो डग मग में,
चल पड़े कोटि पग उसी ओर।
पड़ गई जिधर भी एक दृष्टि,
गड़ गए कोटि दृग उसी ओर।।

जिसके सिर पर निज धरा हाथ,
उसके सिर-रक्षक कोटि हाथ।
जिस पर निज मस्तक झुका दिया,
झुक गए उसी पर कोटि माथ।।

दुख भोल उठे, सुख झोल उठा,
दुख मौन बने, सुख मौन बना।।
कुछ कर्म दुधारे साँचा कर,
सुख-कर्म बना, सुख धर्म बना।।

धर्मांधता के खंडहर पर,
कर पर-प्रहार, कर धर्म-ध्वजा।
मानवता का पावन मंदिर,
निर्माण कर रहे युग-दृष्टा।।

कहते हो जाते दिग्विजयी,
गढ़ते तुम अपना समाज।
आत्माहुति के गंग-यामिक थे,
गढ़ते जनता का स्वर्ण-ताज।।

पिसती, कराहती जनता के,
प्राणों में भरते अभयदान।
अपनी देखते हैं तुम को,
किसने आकर यह किया त्याग।।

हे युगस्रष्टा, हे युगस्वप्न,
गढ़ते कैसा यह गौष गंग।
इस राजतंत्र के खंडहर में,
उगता अभिनव भारत स्वतंत्र।।

—महेन्द्र शरण त्रिपाठी

सत्य-प्रेम और अहिंसा

भाषण से अंश

16

पाठ-परिचय

महात्मा गांधी जी ने सदा कहा जो उन्होंने अनुभव किया, उनके विचारों को उन्होंने नहीं दूसरों तक ले जाने की कोशिश की है कि मैं अपने शत्रु से घृणा कर सकता हूँ या नहीं, यह देखने को नहीं कि प्रेम कर सकता हूँ या नहीं और मुझे ईश्वरदाता किंतु पूरी सच्चाई के साथ कहना चाहिए कि मुझे नहीं लग हुआ कि मैं उसके घृणा कर सकता हूँ। मुझे यह मान नहीं आता कि कभी किसी भी मानुष के प्रति जो मन में तिरस्कार उत्पन्न हुआ हो। मैं नहीं समझ सकता कि यह स्थिति मुझे किस प्रकार प्राप्त हुई परंतु आपसे कहता हूँ कि जीवन भर मैं इसी का आचरण करता आया हूँ।

कर्तव्यपरायण सत्याग्रह के निर्भीक आचरण प्रतिदिन करना का प्रयास ही इसकेलाए अपना पाठ्यक्रम है।

प्रश्न: शुद्ध मनोवृत्ति के लोग इसका आचरण लोग हैं?

बंधुगण का अर्थ यह नहीं है जो आपके भाई बंधु, जो आपको चाहें, आप भी उन्हें में भाई बंधु यह तो सीधा हुआ। बंधुगण में मानुष नहीं होता। मेरा मानें तो मुझे यह कहने में तनिक भी संकोच नहीं होता कि मैं अपने शत्रु को प्यार कर सकता हूँ। मैं किसी से घृणा नहीं करता। मैं यह कहने का अवसर नहीं देना कि उसका कोई शत्रु है।

प्रश्न यह होता है कि जो हमें अपना शत्रु समझते हैं, उनके साथ प्रेम किस तरह करें? मुझे प्रतिदिन हिंदू, मुसलमान और ईसाई लोगों को चिट्ठियाँ मिलती हैं, जिनमें वे कहते हैं कि यह बात नामुमकिन है कि हम अपने शत्रु का प्यार कर सकते हैं। फिर लिखते हैं कि जो गाय हमें क्रूरता और मारने के लिए कसाई के हाथ में सौंपती है, उसे मारने वाले मुसलमान के साथ प्रेम किस तरह हो सकता है। ईसाई पूछते हैं कि सूलशूल मारने वाले, अहूत मानकर अपने भाइयों को दलित करने वाले हिंदुओं के साथ प्रेम किस प्रकार करें? सुलमान लेखक पूछता है कि 'मुसलमान के साथ मुहब्बत कैसे की जा सकती है?'

जीजी से मेरा यह कहना कि आपका बंधुगण कौन है, अगर आप अपने पास में वांछित लोगों को नहीं चाह सकते हैं। इस विरोधाभास पाठ का अर्थ क्या है? इसके मूल में यह तो मेरा है या अपरिपक्व। आप हम सब एक ईश्वर की संतान हैं तो एक-दूसरे से क्यों डरें? हम अपने से भिन्न मत रखने वाले से दूसरे क्यों करें? लेकिन किस तरह से हम घृणा करते हैं, यह पूछें तो उसे करें? मेरा बंधुगण उतना गेरा है—ही इसमें इतनी बात और जोड़ता हूँ कि अगर अपनी बात पाठ दीजिए। अगर आप अपनी बात बताए बगैर यह कहना चाहते हैं तो किस किसी पर हाथ उठाए, उसके लिए यह जायज़ नहीं होगा ऐसी घटनाओं का अनुभव है।

आपके अंदर अगर प्रेम के साथ कर सहने की हिम्मत हो तो आप पचास हृदय को भी पानी-पानी कर देंगे। दूर आए आपसे पचास हो तो आप हृदय उदाकर क्या करेंगे? यह आपको जीतना और अधिक दुःखद करेगा। दुःखद की आप विशेष के भी भी क्या और नहीं पचकर्ती? क्या इतिहास इस बात का साक्षी नहीं? क्या इतिहास में ऐसे उदाहरण नहीं मिलते कि अहिंसा की पराकाष्ठा को पहुँच जाने वाले, बड़े-बड़े विकराल पशुओं को अपने वश में कर लिया?तब इस पराकाष्ठा को अहिंसा को जाने दो। इसके लिए तो महावीर, बुद्धदेव योगेश्वर से भी अधिक बहादुरी की जरूरत है और जिसके प्रति आपके मन में तिरस्कार हो, उसके साथ लड़कर मन जाने के डर से बैठे रहने की अपेक्षा लड़ लेना अच्छा है। कायरता और नपुंसक परस्पर विरोधी हैं।

यूरोप और भारत के कितने ही बड़े-बड़े लेखक कहते हैं कि मनुष्य जाति बैर रहित हो जाए, ऐसा समय कभी नहीं आ सकता। इसी बात पर मेरा विवाद है। मैं तो उनसे यह कहता हूँ कि जब तक मनुष्य बैर रहित नहीं होता, तब तक वह मनुष्य ही नहीं बन सकता। हमें पूरी चाह न न चाहें, हमें इसी राह्ता जाना होगा। आज मैं उनसे यह कहने आया हूँ कि पचास लोगों इस राह्ते जाने की अपेक्षा हम संख्या में इस राह्ते को क्यों नहीं अपनाते? आज जो विवाद है वह पूर्व दिशाओं के सामने ऐसी बात कहनी पड़ती है। पश्चिमों के सामने भी यह कहना पड़ता है। कितने ही ईसाई मुझसे कहते हैं कि ईसा का निर्वाण का उपदेश उनके केवल कागज़ पिन्नों के लिए था। हिंदुस्तान में अहिंसा के विरोधी कहते हैं कि इसमें कायरता फैलेगी। मैं आपसे कहने के लिए आया हूँ—अगर भारत अहिंसक नहीं बनेगा तो इसका सर्वनाश समझिए। दुसरी कौमों का भी यही समझिए। भारत एक बड़ा मुल्क है। अगर यह हिंसक हो गया तो दुसरों की तरह यह भी दुर्बलों पर जबरदस्ती करेगा। अगर ऐसा हुआ तो जरा परिणाम की कल्पना तो कीजिए!

मेरी राष्ट्रीयता में प्रतिपक्ष का सम्मावेश होता है, संसार की समस्त जातियों का समावेश होता है। अगर मैं भारत को अहिंसा का कायल कर सकूँ तो भारत सारे जगत को कुछ चमत्कार दिखा सकेगा। मैं यही समझता कि भारत दुसरे राष्ट्रों को चित्त-भ्रम पर खड़ा होगा। मैं चाहता हूँ कि यह आगे-आग ज्ञान करे और दुसरे राष्ट्रों को भी चलाता जाए। दुसरे राष्ट्र

आत्म-बल का वर्ण नहीं दिखा रहे हैं, इसलिए मुझे इस अटल विश्वास का आश्रय लेना पड़ता है कि मैं कभी उस विधान को स्वीकार न करूँगा जिसका आधार पशु-बल हो। राष्ट्रपति लिंकन ने चौदह शिरश्छेदों की रचना की और कहा --" अगर हम इस पर सफल न हुए तो हत्यिारा तो हैं ही।" मैं इसे फाटकर कहता हूँ कि हमारी सब पार्थिव शस्त्र केवल दुर्ग हैं, इसलिए किसी नए शस्त्र की खोजें। पत्रित, अब हम प्रेम का शस्त्र, सत्य का शस्त्र लें। यह शस्त्र जब हमें मिल जाएगा, तब हमें दूसरे शस्त्रों की आवश्यकता नहीं रहेगी।

—महात्मा गांधी

शब्द : अर्थ

भंगुर	भागना, भाई-भाई की भावना (brotherhood)	दलित करना	दबाना (oppressed)
पुरुषार्थ	पुरुषों द्वारा (old worshiper)	आकांक्षा	अधीरता (impatience)
कृत	कर्म (act)	पाषाण हृदय	पत्थर दिल (stone hearted)
पराकाष्ठा	चरमसीमा (extreme point)	आश्रय	सहारा (support)

करें अभ्यास

पाठ से

1. उचित विकल्प चुनिए :

(क) अंगुर है एक—
- व्यापार
- पाषाण
- कोठी भाग्य
- शिरश्छेद

(ख) मुसलमान गांधी जी से प्रेम करते हैं कि वे
- पाकिस्तान कैसे जाएँ?
- मुसलमानों से मुहब्बत कैसे करें?
- भगी कैसे करें?
- शिरश्छेद कैसे करें?

(ग) पुरुष की आन विशेष के घो से
- ही चुकती है
- और भड़कती है
- टेरी पड़ती है
- कभी जाती कभी चुकती है

(घ) पराकाष्ठा और भंगुर आपस में
- सहयोगी हैं
- समान हैं
- विरोधी हैं
- समानार्थक हैं

2. लघु उत्तरीय प्रश्न :

(क) गांधी जी जीवन-भर क्या आचरण करते आए हैं?

(ख) संयुग का अर्थ गांधी जी के अनुसार क्या है?

(ग) लेख पर लेखकर गांधी जी किस बात को गलत ठहराते हैं?

(घ) यूरोप और भारत के बड़े-बड़े लेखक मनुष्य जाति के बारे में ऐसी ओछे-सी टिप्पणी करते हैं, जिससे गांधी जी सहमत नहीं हैं?

3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :

सप्रसंग आशय स्पष्ट कीजिए–

आज मैं भारत की अहिंसा का कायरता का दावा करूँ तो भारत सारे जगत को कुछ परमार्थ कर के दिखा सकेगा, मैं नहीं समझता कि भारत दूसरे राष्ट्रों की जिंदा भस्म पर खड़ा होगा। मैं चाहता हूँ कि वह आत्मबल प्राप्त करे और दूसरे राष्ट्रों को भी कायरता बचाएँ।

भाषा-बोधन

1. मोहित और समझिए :

(क) महाविद्यालय, सामान्यतः, सर्वसंमत।

(ख) कायरता, दत्तचित्तकरण, राजमुकुट।

(ग) अपेक्षा, कविसम्मत, तुलना में।

(घ) तिरस्कार, अपमान, सहनशि।

इसी प्रकार लिखिए:-

(क) सुबेष – _____, _____।

(ख) प्रेम – _____, _____।

(ग) बात – _____, _____।

(घ) सवसंग – _____, _____।

2. पाठ में समुद्रगुप्त द्वारा राज्य-सुख को पाहिए लिखे—कई-कई, इसी प्रकार पाँच उत्तम राज्य सुख लिखिए ?

_____ _____ _____ _____ _____

3. 'मित्र' उपकरण का प्रयोग करते हुए पाँच राज्य लिखिए ?

जैसे – लिखना

_____ _____ _____ _____ _____

रचनात्मक कौशल

1. 'शक्ति या प्रेम' शीर्षक में किसके माध्यम से शांति स्थापना की जा सकती है। अपना विचार लिखिए।

_____

_____

_____

_____

_____

_____

_____

_____

_____

2. महात्मा गांधी जी की पुस्तक 'सत्य के साथ प्रयोग' पढ़िए।

चेतावनी

कविता

17

पाठ-परिचय

हमारे स्वतंत्रता तो प्राप्त कर ली पर इसे बनाए रखने के लिए भी हमें सजग होना होगा, यही कथ्य कवि ने इस कविता में रोचकता से – संयम, युक्ति, धीरज, कर्तव्य व सभी संकल्प की है, जो युवाओं के साथ अतिसार्थक रूप से आता है।

है सरल आसान होना,
पर कठिन आसान रहना।
साथ उसे तूने कहा है
क्रोध निर्बलता हृदय की,
स्वार्थ है संताप की जड़,
शील है अनमोल गहना।
है सरल आसान होना,
पर कठिन आसान रहना।

वह न समझो मुक्ति पाकर,
कर चुके कर्तव्य पूरा,
देश को जो शक्ति देने
के लिए है कष्ट सहना।
है सरल आसान होना।
पर कठिन आसान रहना।

देश को बलयुक्त करने
यदि न संयम से चलें हम,
काल देगा शास्ता की
फिर हमें जंजीर पहना।
है सरल आसान होना,
पर कठिन आसान रहना।

भीत हो कानून से मन
राह पर आज्ञा नहीं है,
अग्रसर हो ना कुपथ पर
थामना का मान कहना।
है सरल आजार होना,
पर कठिन आजार रहना।

मान कर आदेश तेरा
ले अडिग पथ प्रश्न कर,
बंद होगा भूमि पर तब,
मानवों का रक्त बहना।
है सरल आजार होना,
पर कठिन आजार रहना।

–हरिकृष्ण प्रेमी

शब्द : अर्थ

संताप	शोक (sorrowfulness)	शील	सद्व्यवहार (virtuous)
संयम	नियंत्रण (control)	भीत	भयभीत (feared)
आजार	आगे बढ़ना (moving forward)	कुपथ	गलत राह (wrong direction)

करें अभ्यास

कविता से

1. उचित विकल्प चुनिए :

(क) कठिन है–

आजादी के विषय में चर्चा	आजार रहना
पूर्ण की बात सुनना	पूर्णता का उपदेश देना

(ख) संतरा का गूढ़ कारण है–

पोषक ◯ उपयोग ◯

पायमर्य ◯ उपकार ◯

(ग) रोग को शक्तिशाली बनाने के लिए–

कम खान चाहिए ◯ भोजन देना होगे ◯

नेक कर्मों होंगे ◯ पहल चाहिए ◯

(घ) मन को राह पर लाने के लिए–

कानून चाहिए ◯ रोर चाहिए ◯

आजादी चाहिए ◯ विवेक चाहिए ◯

2. *लघु उत्तरीय प्रश्न :*

(क) कवि ने अपनेपन आचुपन किसे कहा है?

(ख) क्या आजादी पाकर हमारा कर्तव्य पूरा हो गया है?

(ग) किस राह में हम पुनः गुलाम हो सकते हैं?

(घ) भारी पर रक्षपात कब और हो सकेगा?

3. *दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :*

सर्वस्वर्ग आसन प्रकट कोशिश–

देश को बलवान करने

भरे न भोजन से चार्ज हम,

कल देश दुखात की

किस हमें जंजीर चाहा।

भाषा-अवेदन

1. विलोम शब्द लिखिए :

सरल	– _____	मानव	– _____
संयम	– _____	भयभीत	– _____
सुशील	– _____	दासता	– _____
अहिंसा	– _____	मुक्ति	– _____

2. निम्न-निम्न अर्थ लिखिए :

जट् _____ _____

पत _____ _____

दाह _____ _____

सूर शब्द के नए शब्द बनाइए :

तात	– संतति,	अनुजात,	उत्पादन
अर्थ	– समर्थ,	परमार्थ,	अनर्थवाद
सब	– सर्वाधिकार,	सर्वांगता,	सर्वाहित

उचित मुहावरे लिखिए :

क्षमा	–	_____	_____	_____
दया	–	_____	_____	_____
कृपा	–	_____	_____	_____
शक्ति	–	_____	_____	_____

रचनात्मक कौशल

1. भारत व अन्य देशों की स्वतंत्रता आंदोलनों का इतिहास लिखिए।

2. 'स्वतंत्रता की सुरक्षा' इस विषय पर अपने विचार लिखिए।

आगामी युग में पानी

हास्य-व्यंग्य

18

पाठ-परिचय

पानी का संकट विश्व-प्रतिष्ठित पाठ्यक्रम का पाठ है, और ऐसा ही रहा तो अगले सत्रों में इसके कम होने की सम्भावना है। इसी विषय पर लेखक ने यह हास्य व्यंग्य लिखा है—

मर्सीडीज़किलाना : मशीनीकृत गाड़ियों का उपयोग करने वाला मर्सीडीज़किलाना कहलाता है।

गिरजे आने वाले रेलवे जब आज की तरह पानी नहीं मिलेगा, तब हमारी-आपकी दुनिया ही बदल जाएगी। सिर्फ बाहरी नहीं, भीतरी दुनिया भी। तब पानी से जुड़ी तमाम कहानियाँ के अर्थ बदल जाएँगे। जैसे आज कोई बहुत पैसा खर्च करता है, तो लोग कहते हैं कि—'पानी की तरह पैसा बहाया।' पर पानी की किल्लत हो जाने के बाद पैसे को पानी की तरह बहाया नहीं जा सकेगा, क्योंकि तब पानी तो पैसे से भी महँगा हो जाएगा। तब पानी की तरह पैसा बहाने का अर्थ होगा—बहुत किफायत से खर्च करना या बेकूफी करना।

पानी की कमी के दौर में अगर किसी की बहादुरी के बारे में कहा जाए कि उसने अच्छे-अच्छों को पानी पिला दिया, तो लोग कहेंगे कि कैसा पागल है, क्या उसने प्याऊ खोल रखी है? इसे तो मर्सीडीज़किलाना के पास ले जाना चाहिए। इसके अलावा, लड़की की शादी के बाद रेलवे जाएगा कि लड़के के घर में पानी की कितनी टोंकियाँ हैं और वहाँ पानी आसानी से मिलता है या नहीं। लड़के की कर-काठी मजबूत है या नहीं और जरूरत होने पर पानी की बालटियाँ उठाकर ला सकेगा या नहीं।

इस बजाय के लिए जगह-जगह हौदी-कनस्तेर खुलेंगे, जिनमें उन्हें कम पानी खर्च करने के लिए प्रशिक्षित किया जाएगा। पड़ोसी की टंकी से पानी गायब करने का कड़ा अभ्यास कराया जाएगा।

वैसे में घर के आतिथ्य-सत्कार की शिष्टाचारी भी बदलेगी और हरेक से पानी पूछने की परंपरा खत्म हो जाएगी। निमंत्रणों में ही लगता है कि भोजन के बाद पानी का एक छोटा पाउच पकड़ा दिया जाए। कई लोगों की शादियों में मनोरंजक पानी पीने की खूब होगी। वैसी शादी देखने पाना भी कठिन फिर नहीं, चाकर्ड बड़े आदमी हैं। पानी पीने का पूरा इंतजाम कर रखा है।

नहाने के तरीकों में भी अनुकूलपूर्ण परिवर्तन आएगा। शायद कंपनियाँ इस क्षेत्र में कूद पड़ेंगी। वे लाइ-लाइ में प्रचार करेंगे, कुछ इस प्रकार – 'लीजिए, मारुतीवेलस्ट कंपनी का कुरुप-शरीर-नये, एक लीटर पानी में सुसुप्त परिवार नहाए। बाबा रामदेव टमाटर-आम के पल्पर बताते चला आएँगे। कई सिरर्च पाट बताएँगे कि रोज नहाने से स्किन को नुकसान होता है।

तब संभव है कि तीरकों पर प्रतिबंध लगा दिया जाए। खेतों के बीच-बीच में होने वाला ट्रिंबिग भी तब बंद हो जाएगा। धार्मिक क्षेत्र में पानाका को पुण्य से नहाने (नहाने का फल) खत्म हो जाएगा। किसी ऐसी रचना का अविष्कार भी संभव है, जिसे खाने के बाद आदमी तीन दिन तक पानी ही न पिए।

–शरद उपाध्याय

शब्द : अर्थ

किल्लत	कमी, अभाव (scarcity)	किफायत	मितव्ययता (economy)
समूचा	पूरा (whole)	त्वचा	त्वचा (skin)
प्रतिबंध	रोक (banned)	बाथ	नहाना (bath)
शावर	फव्वारा (shower)	स्प्रे	छिड़काव (spray)
अनुसुप्त	पूर्णतया (completely)	सभी	सब (all)
ट्रेनिंग	व्यवस्था (arrangement)		

करें अभ्यास

पाठ से

1. उचित विकल्प चुनिए :

(क) आने वाले समय में बरात जाएँगे पानी से संबंधित–

- अवतरणार्थ
- टीकाएँ
- कहानियाँ
- उक्तियाँ

(ख) आने वाले समय में पानी का प्रयोग होगा–

- जी भरकर
- किफायत से
- कभी-कभी
- गाय में एक बार

(ग) आगामी युग में देखी जाएगी घर की–

- चौकरी
- घर की स्थिति
- संस्कार
- पानी भरा सकने की योग्यता

(घ) शब्दों में तब गिरा करेंगे पानी के–

- मुहावरे
- कुलदेव
- पाठ्य
- निलय

2. निम्नांक्त वाक्यों में :

	सत्य ✓	असत्य ×
(क) इस भाषण के माध्यम से लेखक ने हमें बताने का प्रयास किया है।		
(ख) लेखक ने पानी के सदुपयोग की ओर ध्यान दिलाया है।		
(ग) पुस्तकों पर प्रकाशित भाषाएँ पानी खाने की संभावना है।		
(घ) लेखक की भाषा सुदृढ़ संस्कृतनिष्ठ दिखी है।		
(ङ) पाठ में कोलकाता की भाषा के अनेक शब्द आए हैं।		

भाषा-अवेशन

1. पाठ में प्रयुक्त अंग्रेजी भाषा के शब्द ढूँढकर लिखिए : _____ _____

2. समानार्थक शब्द लिखिए :

- कंजूसी – _____
- समृद्ध – _____
- शादी – _____
- आविष्कार – _____

3. *दिए गए शब्दों के दो-दो अर्थ लिखिए :*

शब्द	अर्थ	अर्थ
चार	_____	_____
हार	_____	_____
कर	_____	_____
डाल	_____	_____

रचनात्मक कौशल

1. 'आज से सौ वर्ष पश्चात् की दुनिया' यह कैसी होगी? कल्पना करके लिखिए।

2. पानी को स्वच्छ व सुरक्षित रखने के लिए आप क्या करते हैं? बताइए।

माँ तुझे प्रणाम

ललित निबंध

19

पाठ-परिचय

जननी और जन्म-भूमि पर कवियों ने बहुत कुछ कहा है। बालक में माँ को सर्वोच्च अवलंबनीय है यहाँ विद्वान की माँ ने अपना सुपुत्र अर्पण करने वाली माँ को नमन किया गया है।

निबंधकार विद्वानों में पुत्रवत् मान-पिता की आज्ञा की रक्षा के लिए किए निर्णय किन्तु पुत्र पुष्पराज संन्यासिनी की जननी ही इसे निर्णयन करना कहा जाता है।

पुत्र सुपुत्र था। उसने माँ को चारों धामों की यात्रा करवाई। माँ का निधन हुआ तो उसने विधि-विधान से अंतिम संस्कार किया। गया में पिंडदान करने के बाद उसने आत्मगत भाव से पुलकित से कहा –"पंडित जी, आज मैं माँ के संपूर्ण ऋण से उऋण हो गया।"

पुलकित ने मुस्कराते हुए कहा, "यजमान, आप माँ के संपूर्ण ऋण से नहीं, बल्कि, उसके एक लखोरा भाग से उऋण हुए हैं।"

"क्या कह रहे हैं पंडित जी? लखोरा भाग, यानी सिर्फ एक लखोरी जिस्सा?

"जी हाँ, सिर्फ एक लखोरी जिस्सा।" जब तुम सिर्फ एक सप्ताह के थे। माय की कौन्कौन्सारी उंट की एक रात में तुम्हारे बिस्तर गीला कर दिया था। माँ को बुखार था वह सूखा उंट से कांप रही थी। लेकिन उसने तुम्हें गीली जगह से खिसकाकर सूखी जगह पर लिटा दिया और

खुरु उस गीली जगह पर लेट गए। अब, तुम निर्भय उस एक कर्ज से मुक्त हुए हो।

तुम उदास हो गया। उसे लगा कि माँ की सेवा, उसे सीधे-जन कराना, उसका अंतिम संस्कार, पिंडदान सब व्यर्थ गया।

युधिष्ठिर ने यमराज की हताशा भाँप ली। और कहा, "यमराज सच तो यह है कि दुनिया में कोई भी संतान माँ के कर्ज से मुक्त हो ही नहीं सकती है। कोई अगर उसके ऋण का लक्षांश भी चुका दे तो वह धन्य हो जाता है।"

सच में कोई भी माँ के ऋण से उऋण नहीं हो सकता। मनुष्य से छोड़िए, इतिहास और मिथिलाश भी माँ के कर्ज से मुक्त नहीं हो सकते हैं। दुनिया की अनेक माँओं में धीर, वीर, संत, क्रांतिकारी सपूतों को जन्म देकर समय को अपना ऋणी बना दिया है। आइए, कुछ ऐसी ही माँओं के बारे संपूर्ण मानुसता को प्रणाम करते हैं।

भारतीय महाकाव्यों के सर्वोच्च महानायक, मर्यादा पुरुषोत्तम राम। उनको माँ कौसल्या। कौसल्या ने राम के रूप में दुनिया को एक ऐसा राम दिया, जिसकी चमक आज भी दुनिया को नीति और मर्यादा की राह दिखाती है। कौसल्या ने तो दुनिया को उजाले दुःख हर करने वाला पुत्र दिया पर उनके लिए सबसे बड़ा सुख क्या था? सबसे बड़ा सुख था राम की शिशु लीला का साक्षी बनना। जब राममाँए प्रकट होते हैं तो ये कहती हैं –

कौसैं शिशु लीला अति शिभलीला यह सुख परम अनूप

राम भी उनके आग्रह को तुरंत मान लेते हैं और शिशु बनकर रोना शुरू कर देते हैं –

सुनि वचन सुजाना रोदन ठाना होई बालक सुरभूपा।

माँ को यही परम सुख देने के लिए कृष्ण भी यशोदा से लिए करते हैं –

'मैया मैं तो चंद खिलौना लैहौं या फिर बनाई देते हैं –

'मैया मोरी मैं नहिं माखन खायो'

और ये अपने छोटे होने का फ़ायदा भी देते हैं –

'छोकरो केहि विधि पायो'

पुत्र सुपुत्र हो जाए, तो उसका होना ही माँ के जीवन की सफलता है। हर माँ की आकांक्षा होती है कि उसका पुत्र पतापवी हो। और इस रंगी दोनों माँ की हसरत भरी निगाह से देखती है। तभी तो महाकवि तुलसीदास की माँ हुलसी के लिए कहा गया है –

सुरतिय, नरतिय, नागतिय,
सब चाहत अस होय।
गोद लिए हुलसी फिरें,
तुलसी सो सुत होय।

माँ की सुपुत्र पुत्र के प्रसंगों को यह बस रोती है। गंधारी का उदाहरण हमारे सामने है। गंधारी ने जानबूझ अपनी आँखों पर पट्टी बाँध रखी थी। केवल एक बार वो आँख से पट्टी खोली थी दुर्योधन को आँख भर शुभाशीष देने के लिए। वह दुर्योधन को निर्बलन अपने पास बुलाती है। कृष्ण इस बात को समझ जाते हैं कि अगर गंधारी की आशीष दृष्टि दुर्योधन के शरीर पर पड़ गई, तो उसका पूरा शरीर फौलादी हो जाएगा और फिर उसे महाभारतकाल हो जाएगा। उन्होंने दुर्योधन को सलाह दी कि इस तरह माँ के सामने जाने में तुम्हें शर्म नहीं आती। कम से कम एक लँगोटी तो पहन लो। दुर्योधन ने माँ की आज्ञा की अवहेलना की और लँगोटी पहनकर उनके पास पहुँचा। गंधारी की दृष्टि उसके शरीर के जितने हिस्से पर पड़ी वह वज्र का हो गया, लेकिन जिसका हिस्सा लँगोट से ढका हुआ था, उस पर माँ की कृपादृष्टि नहीं पड़ सकी। अंततः जाँघ के उसी हिस्से पर गदा का प्रहार कर भीम ने दुर्योधन का अंत किया।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के व्यक्तित्व निर्माण में उनकी माँ पुतलीबाई की अनंत महत्वपूर्ण भूमिका रही है। पुतलीबाई ने बचपन में ही उनके अंदर ऐसे संस्कार रोप दिए थे, जिससे आगे चलकर वे एक सत्याग्रही महात्मा बन सके और देश को आजाद कराने की अहिंसक लड़ाई लड़ सके। जीजाबाई न होती, तो क्या शिवाजी का व्यक्तित्व वैसा ही होता, जैसा वह था। जीजाबाई ने जहाँ उन्हें स्वराज स्थापना का स्वप्न और अन्याय-अत्याचार के विरुद्ध लड़ने की संकल्प दिया वहीं उन्हें सभी का सम्मान करने की शीख भी दी। शिवाजी की आशीर्वाद से ही एक बार एक किला फतह करने गए और स्वराज की स्थापना की। जीजाबाई ने जहाँ पुत्र को अपने आदर्शों के अनुसार ढाला वहीं मैथिलीशरण गुप्तजी के उपन्यास में

की नायिका माँ जिलाबाय अपने क्रांतिकारी पुत्र पानेल के विचारों के अनुसार खुद को ढालती है। एक अनपढ़ धर्मभीरु महिला का इस तरह कायांतरण आसान काम नहीं था, लेकिन जब कोई माँ बेटे के लक्ष्य को अपना लक्ष्य बना लें तो उसके लिए कुछ भी मुश्किल नहीं होता।

आइए मातृभाषा के इस स्वरूप को नमन करते हुए अपनी माँ मातृभूमि और मातृभाषा के प्रति अपने कर्तव्य को पुनः-पुनः याद करें।

—अमापर्ण प्रकाश

शब्द : अर्थ

नामी	सुविख्यात, सुप्रसिद्ध(famous)	आवंटन	उपेक्षा(ignored)
आश्वस्त	निश्चिंत(satisfied)	ऋण	कर्ज लौटा होगा (paid debt)
लक्षित	लक्ष्यभूत किया (aim)	संबल	सहारा(support)
रूपांतरण	रूप बदलना(changed form)	कृतार्थ	कृत के भी पार (blissful sight)
सुपुत्र	ऐसाबेटा के रूप(king of dentals)		

करें अभ्यास

पाठ से

1. उचित विकल्प चुनिए :

(क) पुत्र ने माँ को चाय काई — अवलम्ब की / ऐश्वर्यवत् की
नहीं मान की / वैभवों रोती थी

(ख) यशवन्त ने आज्ञा कि संसार की माँ भी संसार में जन्म से-
नहीं डरती / कभी मुक्त नहीं हो सकती
नहीं रुकती / नहीं थकती

(ग) पुत्रीय की आंखे गीली ने मातृत्व पैदा अपने बना दिया है-
सरकार को / कानून को
समाज को / राजा को

(घ) भीख ने प्राप्त किया पुत्रवियन को-
पीठ पर / कीच पर
मौत पर / गर्दन पर

2. *लघु उत्तरीय प्रश्न :*

(क) इतिहास की माँ का अर्थ कैसे हो जाता है?

(ख) लेखक ने भारत का सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य किसे कहा है?

(ग) भारत में किन-किन भाषाओं का उल्लेख विशेष रूप से किया गया है?

(घ) जीजाबाई ने शिवाजी के व्यक्तित्व में क्या विशेषताएँ उत्पन्न की?

3. *दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :*

भारतेंदु भारत दशा कविता-

दुनिया की अनेक कौमों ने, वीर, धीर, संत, क्रांतिकार पुरुषों को जन्म देकर समय को अपना ऋणी बना लिया है।

भाषा-अध्ययन

1. *उलभेद शब्दों के लिए एक शब्द लिखिए :*

क्रांति करने वाला – क्रांतिकारी

(क) जन का योग – _____

(ख) धर्म की ध्वजा – _____

(ग) ज्ञान में विहार करने वाले – _____

(घ) संकट से घिरा हुआ – _____

2. *ओर शब्द बताइए (अर्थ सहित) :*

(क) आसन – _____

आयन – _____

(ख) लोक – _____

लौकिक – _____

(ग) आत्म – _____

आत्मीय – _____

3. *दिए गए शब्दों का विग्रह बताइए :*

सुगुण – सु + गुण

कृतकृत्य – _____ + _____

राष्ट्रपिता – _____ + _____

महानता – _____ + _____

सुभाषित – _____ + _____

रचनात्मक कौशल

1. एक जीवन चरित्र (हिंदी की पुस्तक में से ढूँढ़कर लिखिए)

(क) जीवनकार्य

_____

_____

_____

_____

_____

_____

(ख) पुस्तकें

2. अपनी माँ के प्रति आभार प्रकट करते हुए उन्हें एक पत्र लिखिए।

भगतसिंह का पत्र

पत्र

20

(केवल पढ़ने के लिए)

बात उन दिनों की है जब भारत में अंग्रेजों का आत्याचार बढ़ रहे थे आजादी के लिए क्रांतिकारियों ने अपना तन-मन-धन न्योछावर करने की ठान ली थी। उन्हीं क्रांतिकारियों में से एक नाम है सरदार भगतसिंह का, जिन्होंने अंग्रेजी सरकार तक अपनी आवाज पहुँचाने के लिए लाहौर में ब्रिटिश संसद में बम विस्फोट किया था। इसमें उनके सहयोगी राजगुरु और सुखदेव भी शामिल थे। परिणाम यह हुआ कि अंग्रेजी सरकार ने तीनों क्रांतिकारियों को फाँसी बना कर उन पर रोशहोड़ का मुकदमा चलाया और उन्हें फाँसी की सजा सुनाई गई।

भगतसिंह के शुभचिंतक चाहते थे कि भगतसिंह की फाँसी की सजा टल जाए। किंतु, भगतसिंह को यह मंजूर नहीं था। उन्होंने पंजाब के गवर्नर को पत्र लिखकर यह आग्रह किया कि उन्हें गोली से उड़ा दिया जाए।

भगतसिंह ने पंजाब के गवर्नर को जो पत्र लिखा था, उसके मुख्य अंश इस प्रकार हैं-

सेंट्रल जेल

लाहौर

19 नवम्बर, 1931

योग्य में,

गवर्नर

पंजाब प्रांत

आदरणीय महोदय,

योग्य में याचिका निवेदन है कि भारत की ब्रिटिश सरकार के सर्वोच्च अधिकारी, वायसराय ने एक विशेष अध्यादेश जारी करके लाहौर षड्यंत्र मामले की सुनवाई के लिए एक विशेष अदालत स्थापित की थी, जिसने हम फाँसी की सजा सुनाई। हमारे विरुद्ध सबसे बड़ा आरोप यह लगाया गया है कि हमने सम्राट जार्ज पंचम के विरुद्ध युद्ध किया है। अदालत के इस निर्णय से दो बातें स्पष्ट हो जाती हैं- प्रथम यह कि

अंग्रेजों और भारतीयों के मध्य एक युद्ध चल रहा है। दुसरी यह कि हमने निश्चित रूप से इस युद्ध में भाग लिया है। अतः हम राजकी युद्धधर्मी हैं। यद्यपि इसकी व्याख्या में बहुत सीमा तक अतिशयोक्ति से काम लिया गया है तथापि हम यह कहे बिना नहीं रह सकते कि ऐसा करके हमें सम्मानित ही किया गया है।

हम यह कहना चाहते हैं कि युद्ध छिड़ हुआ है और यह युद्ध तब तक चलता रहेगा, जब तक कुछ मूरदीपर राजिकताओं लगेन भारती संप्रभुत्वों और श्रमिक वर्ग का शोषण करते रहेंगे। वे लोग चाहे अंग्रेज पूँजीपति या अंग्रेज शासक हों या सर्वश्रेष्ठ भारतीय ही क्यों न हों, इससे कोई अंतर नहीं पड़ता। भले आपकी सरकार छोटी-मोटी रियासतें देकर या सम्मानित करके भारतीय समाज के उच्च वर्ग को अपने पक्ष में कर ले, इस सब बातों से कोई फर्क नहीं पड़ता।

हो सकता है कि युद्ध भिन्न-भिन्न दशाओं में भिन्न-भिन्न रूप प्रहण करे — कभी यह युद्ध प्रकट रूप से हो, कभी परोक्ष रूप में चलता हो, कभी संसदीय रूप धारण कर ले, कभी एक आंदोलन के स्तर पर जारी रहे और कभी इतना भयानक हो जाए कि प्राणों की बाजी लगा देनी पड़े।

यह आपकी इच्छा है कि आप किस परिस्थिति को चाहें चुन लें, परंतु यह युद्ध चलता रहेगा। इसमें छोटी-छोटी बातों पर भगड़ा नहीं किया जाएगा। यह युद्ध लगातार नई शक्ति व ऊर्जा के साथ लड़ा जाता रहेगा। यह तब तक समाप्त नहीं होगा, जब तक वर्तमान सामाजिक ढाँचे के स्थान पर एक नए समाजवादी गणतंत्र की स्थापना नहीं हो जाती और सुचिर्द एक नवीन युग का सूत्रपात नहीं हो जाता।

निकट भविष्य में यह युद्ध अंतिम रूप में लड़ा जाएगा और तब यह निर्णायक युद्ध होगा। साम्राज्यवाद एवं पूँजीवाद लगेन समय के मेहमान हैं। युद्ध न हो इसमें प्रारंभ किया है और न ही यह हमारे जीवन के साथ समाप्त होने वाला है। हमारा बलिदान इतिहास में बलिदानों की उस गुंजलक में एक कड़ी के रूप में होगा, जिसे पार्टिजन राज, धनकोलोचन और फंदासेज़ा आकार के बलिदानों ने जिसे रूप रूप से प्रकाशमान कर दिया है।

जहाँ तक हमारे भाग का संबंध है, हम पुनः जोर देकर आपसे यह कहना चाहते हैं कि आपने हमें फाँसी पर लटकाने का निर्णय कर लिया है, तो आप ऐसा करेंगे ही। आपके हाथों में शक्ति है और आपको अधिकार भी प्राप्त है। परंतु, इस प्रकार आप 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' वाला सिद्धांत ही अपना रहे हैं और उस पर कटिबद्ध हैं। अंग्रेजों की अब

तक की कार्रवाई इसका साक्षी है। हम बस इतना कहना चाहते हैं कि आपकी सरकार की ही एक अदालत ने हम पर पुरुष जारी रखने का अभियोग लगाया है। ऐसे में हम पुरुषवेश शुरू और इसी आधार पर हम आपसे माँग करते हैं कि हमारे प्रति पुरुषवीरत्व जैसा ही व्यवहार किया जाए – हमें फौसी देने के बदले गोली से उड़ा दिया जाए।

अब यह विचार करना आपका काम है कि आपका उस फैसले में विश्वास है, जो आपकी अदालत ने सुनाया है। आप अपने कानों एवाज इस बात का प्रमाण दीजिए। हम विनम्रपूर्वक आपसे प्रार्थना करते हैं कि आप अपने सेना विभाग को आदेश दें कि हमें गोली से उड़ाने के लिए सैनिक टोली भेज दी जाए।

भवदीय

भगतसिंह

मूल्यांकन 2

कुल अंक 100

संकलित मूल्यांकन (समेटिव)

1. अति लघु उत्तरीय प्रश्न : 1×9=9

अर्थ लिखिए :

तस्करी, संसद, आजकल, उच्चतम, कृत्य, विलासता, विकासशील, प्रतिबंध, भाजपाध्यक्ष

2. लघु उत्तरीय प्रश्न : 2×9=18

(क) इतिहास भी नहीं का अपनी कैसे हो पता है?

(ख) जीवनचर्या ने शिवाजी के व्यक्तित्व में क्या विशेषताएँ उत्पन्न की?

(ग) गांधी जी के अनुसार संतुलन का क्या अर्थ है?

(घ) आजकल शासकीय गृह के प्रति लोगों को लगाव कैसा है?

(ङ) सोना जो किन किन गुणों से खरापन से जुड़ी है?

(च) सोचना होता की क्या विशेषता है?

(छ) पाठ के आधार पर शासनेतर बाग का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

(ज) एक सूनी सेज का चित्र लिखिए।

(झ) गांव पर विकास गांधी जी की किस बात को गलत ठहराते हैं?

3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न : 5×3=15

संकेतों सहायता अतिरिक्त–

(क) आज में भारत को अहिंसा का कारण कर सका तो भारत विश्व भर में कुछ चमत्कार करके दिखा सकेगा। हाँ यहाँ समझना कि भारत दूसरी राष्ट्रों की किस नकल पर खड़ा होगा।

(ख) अगर कलाधीश यहाँ रहता तो मेहनुददीन के कुछ यहाँ रहता। सब के साथ, साधुता की साँठगाँठ, केसर के खेत, साहूकार के गरीब बनने की चाहत उसने देखकर के विकास गर्वित प्रेरित और प्रतिनिधि भारतवर्ष भाषायें और इनसे और सबको बढ़कर कलाधीश के चोले पहने मेहनमददीन लोग यह उस स्वर्ग नहीं है तो और क्या है?

(ग) रेल को बनाकुशल करने
भूमि पर संकल्प से चार्ज।
काल रेख शासक को
फिर हर्ष जोरदार पहनना।

4. लघु उत्तरीय प्रश्न (भाषा कौशल) : 5×4=20

एक-एक शब्द लिखिए–

(क) जो करने योग्य न हो — जो संभव न हो —

(ख) 'गिन्' उपसर्ग का प्रयोग करते हुए चार शब्द लिखिए–

(ग) उचित विराम-चिह्न लगाइए –
क्या आपने शासकीय कुल रेखा है, गौतम कुल रेखाकार कोनों में तो इसे अवश्य जोड़ूँगे,

(घ) अपने शिक्षक अंश स्पष्ट कीजिए:

आकाश _____

आशा _____

5. उचित विकल्प सुनिए : 2×9=18

(क) तुलसीदासजी के मंदिर का गुंबद है–
- पीतल का
- लोहे का
- ताँबे का
- चाँदी का

(ख) पहले भाग लगवाया था–
- राजाओं ने
- औरंगजेब ने
- नवाबों ने
- अकबर ने

(ग) सोना जो मुलायम है–
- सलवीन नृप को
- बैसे को
- पीपड़ा को
- दिल्लत को

(घ) सोना जो अस्थिर है–
- अपने चमत्कार से
- लोगों के प्यार से
- अपने वार से
- अपनी आन से

(ङ) संघृत है एक–
- व्यापार
- कोरी धारणा
- भाषण
- विरुपोत

(च) मुसलमान गांधी जी से प्रश्न करते हैं कि वे
- पवित्रता कैसे जानें?
- मुसलमानों से मुलाकात कैसे करें?
- गधी कैसे करें?
- विश्वास कैसे करें?

(छ) कवि है–
- आकाशी के विषय में चर्चा
- अकबर खान
- दूसरे को आकर सुनना
- दूसरों को उपदेश देना

(ज) संतोष का मूल कारण है–
- धोखा
- स्वार्थ
- भयवर्ण
- उपकार

(झ) देश को शक्तिशाली बनाने के लिए–
- कम खाना पहनना
- भाषण देते होंगे
- नेता बनते होंगे
- पहल पहनना

5×4=20

रचनात्मक मूल्यांकन (फॉर्मेटिव)

1. 'आज से जो कर्म कल को दुनिया' यह कैसी होगी कल्पना करके लिखिए।
2. अपने घर का आकार बनाने हुए उन्हें एक पत्र लिखिए।
3. 'शक्ति अथवा प्रेम' संघात में किसके माध्यम से शांति स्थापना हो सकती है? अपने विचार लिखिए।
4. पूरी पुस्तक में पाठ हेतु जो-जो स्थानों पर गई हैं, उनके नाम बताइए।